श्री गणेश वन्दना

(तर्ज : इतना तो याद है मुझे...)

गोरी के लाल सुनो-३, कि कबसे तुझे याद करें,
किर्तन में आ जाओ-३, ये तुमसे फरियाद करें ।। टेर ।।

तुझको मनाऊँ, देवा कबसे बुलाऊँ,
अपनी पलकें बिछाऊँ, अब तो आजा,
गिरजा के प्यारे, बाबा शिव के दुलारे,
आजा तुझको पुकारें, गण राजा,
तुम बिन कौन बता-३, जो आके पूरे काज करे ।। १ ।।

किरपा दिखादे, सारे विघ्न हटादे,
हमको दर्शन दिखादे मेरे दाता,
आँगन बुहारूं, तेरा रस्ता निहारूँ,
तोसे अरजी गुजारूं, ओ विधाता,
दूजा ना तेरे सिवा-३, जो सिरपे मेरे हाथ धरे ।। २ ।।

घर को सजाके, देवा आँगन महका के,
तेरी ज्योती जगाके, हम बुलायें,
नारियल चढ़ाके, तेरे भोग लगाके,
तेरी महिमा को गाके, हम सुनायें,
"हर्ष" ना देरी करो-३, विनती ये तेरा दास करे ।। ३ ।।

श्री गणेश वन्दना

(तर्ज : देता हरदम सांवरे...)

पहले ध्याऊँ मैं तुझे पूरण कीजो काज,
किर्तन में अब आन पधारो, गणनायक महाराज ।। टेर ।।

आज हमने चाव से किर्तन कराया है,
देवों के सिरमौर को पहले मनाया है,
मूसक चढ़के आ जाओ, देवों के सरताज ।। १ ।।

आपके बिन काम कोई ना सफल होवे,
आपके आने से ही मुश्किल का हल होवे,
आजा सूने हैं पड़े, तुझ बिन सारे साज ।। २ ।।

हे गजानन दास की अरजी तू सुन लेना,
"हर्ष" तेरी बाट जोवे आके सुध लेना,
भगतों की रखले जरा, अबतो आके लाज ।। ३ ।।

(राग रचयिता : प्रवीन बेदी)९८३०४३२६६९

म्हे थारी संतान हाँ सिरपे, हाथ फिरावण आ जइयो,
थे हो म्हारे कुल का रक्षक, लाज बचावण आ जइयो ।।

पैन्डे माही थारे नाम को, "दिवलो रोज जगावां हाँ"-२,
हर मावस ने थारे नाम सूं, "ब्राह्मण भोज करावाँ हाँ"-२,
जद जद थाने याद करां थे, मान बढ़ावण आ जइयो ।। १ ।।

टाबरियाँ पर भीड़ पड़े तो, "थे ही करो सहाई जी"-२,
पित्तरेश्वर की दुनिया माही, "भोत बड़ी सकलाई जी"-२,
जद जद म्हापे संकट आवे, पीड़ मिटावण आ जइयो ।। २ ।।

म्हे बालक नादान हाँ म्हासूं, "भूल चूक होणे पावे"-२,
"हर्ष" थे म्हारा मायत थांसू, "भूल कदे ना हो पावे"-२,
जद जद देवा रस्तो भूलां, राह दिखावण आ जइयो ।। ३ ।।

श्री हरि वन्दना

(तर्ज : बैठ्यो खाटू मे लगाकर...)

करले करले रे हरि को गुणगान,
भजन बिना कइयाँ सरसी ।। टेर ।।

पाप को जोर बढ़्यो दुनिया में धर्मी को मन डोले,
मोह माया में माणस फंसग्यो पैसो सिर चढ़ बोले,
धरले धरले रे हरि को थोड़ो ध्यान,
भजन बिना कइयाँ सरसी ।। १ ।।

भजन भाव सै मीरा बाई गिरधारी ने पाई,
नगर सेठ नरसी की हुण्डी सांवरियो सिकराई,
भजले भजले रे हरि को भाया नाम,
भजन बिना कइयाँ सरसी ।। २ ।।

"हर्ष" कह्वे ई कलयुग माही जप तप कोन्या होवे,
नाम सुमर ले प्रेम भाव सूं भव सै तू तर जावे,
करले करले रे भजनां को रसपान,
भजन बिना कइयाँ सरसी ।। ३ ।।

(तर्ज : जिस पथ पे चला...)

क्यूं उलझा भला, मोहमाया मे तू, ईश्वर को मनाले रे,
साथी है तेरा, ये श्याम मेरा, जरा ध्यान लगाले रे ।। टेर ।।

घिर जायेगा जब कष्टो में, "तो ये ही सहारा देगा"-२,
तेरी सोई हुई किस्मत में, "ये आके चमक भर देगा"-२,
ये है तेरा सदा-२, तू ये मूरत जरा, आँखो में बसा ले रे ।।

तेरे दुख के दिनों में तेरे, "अपने ही पराये होगें"
करता है भरोसा तु जिसपे "तुमको ही वो धोखे देगें"
ये दयालु इसको तु जार, माझी तो बना ले रे ।।

आयेगें भंवर तो तुझको, "माझी की जरूरत होगी"-२,
"हर्ष" कैसे चलेगा अकेले, "साथी की जरूरत होगी"-२,
ये बना है तेरा-२, चरणो में जरा, तेरे सिर को झुकाले रे ।।

श्री हरि वन्दना

(राग रचयिता :प्रवीन बेदी)९८३०४३२६६९

चाहे तुम बोलो राम, चाहे बोलो घनश्याम,
दोनो ही है तारण हारे-२, भजले प्रभु का नाम ।। टेर ।।

त्रेता युग में राम अवतारे,
द्वापर में घनश्याम पधारे,
दोनों ही विष्णु अवतारी-२,
दोनों का रंग श्याम ।। १ ।।

सीता के श्री राम है प्यारे,
राधा के नन्द लाल दुलारे,
दोनों ही है सुन्दर जोड़ी-२,
दर्शन से कल्याण ।। २ ।।

अवध पुरी में राम मिलेगें,
गोकुल में घनश्याम मिलेगें,
दोनों के ही श्री चरणों में-२,
"हर्ष" करे प्रणाम ।। ३ ।।

(तर्ज : तुम अगर साथ देने का...)

जिसने भूखे के मुख में निवाला दिया,
भोग भगवान को उसने भले ना दिया,
जिसने हृदय में राम का दर्शन किया,
फिर वो मन्दिर कभी भी भले ना गया ।। टेर ।।

जिसके द्वारे पे गंगा की धारा बहे,
उसे कूँअे के जल की क्या दरकार है,
जिसके नैनो में सीता राम बसे,
ध्यान दूजे का उसने भले ना धरा ।। १ ।।

जिसने माता पिता की है सेवा करी,
उसको तीरथ की बोलो क्या दरकार है,
जिसकी जिह्वा सदा सीता राम भजे,
गान दूजे का उसने भले ना किया ।। २ ।।

"हर्ष" सन्तो का जिसने भी मान किया,
ध्यान, जप तप की उसको क्या दरकार है,
जिसकी साँसे सदा सीता राम रटे,
नाम दूजे का उसने भले ना लिया ।। ३ ।।

श्री हरि वन्दना

(तर्ज : समझौता गमों से करलो...)

दिल ना तुम किसी का तोड़ो-२,
दिल टूटा तो मंदिर टूटेगा, ओSSS,
दिल में है भगवान का डेरा-२,
दिल टूटा तो रब ये रूठेगा ।। टेर ।।

दिल है प्यारे, काँच का टुकड़ा,
ठेस लगी और, टूट के बिखरा,
प्यार भरे सीने में, ठेस कभी ना लागे ।। १ ।।

होंठ हँसे तो, मन खिल जाये,
मुख मण्डल पर, खुशियाँ छाये,
दूजे के होठों की, हँसी कभी ना छीनो ।। २ ।।

गिरता मंदिर, बन जायेगा,
टूटा दिल ना, जुड़ पायेगा,
"हर्ष" कहे नफरत के, बीज कभी ना डालो ।। ३ ।।

(तर्ज : क्या मिलिये ऐसे लोगों से...)

धर्म की खेती करले बन्दे, सत्कर्मों की बेल लगा,
आनन्द ही आनन्द उगेगा, जीवन तेरा धन्य बना ।। टेर ।।

हाड़ माँस की इस भूमी पर, राम नाम की खेती कर,
सत्संगत की खाद डाल दे, बीज भजन के तू बो कर,
लहलहायेगा खेत तुम्हारा, हरि नाम का हल तु चला ।। १ ।।

सींचेगा संतोष के जल से, फूल खिलेगें उपवन में,
प्यार की कोंपल फूट पड़ेगी, प्रेम जगेगा तन मन में,
फल से फिर तू कोठे भर ले, खुद भी खा औरों को खिला ।। २ ।।

देख कहीं पर पाप के कीड़े, फसल तेरी ना खा डाले,
जुल्म फरेब की काली आँधी, खेत तेरा मुरझा डाले,
अत्याचार के सूखे से तू, "हर्ष" तेरे खेतों को बचा ।। ३ ।।

(राग : स्वरचित)

यहाँ साथी तेरा अपना, कोई नहीं,
दो दिन का रैन बसेरा, ये तन भी नहीं है तेरा,
बस आत्मा तेरी है लिखा, गीता में यही ।। टेर ।।

क्या लेके आया बन्दे, क्या लेके जायेगा,
करमों का लेखा जोखा, संग तेरे जायेगा,
कर्म करेगा जैसा, पायेगा वही ।। १ ।।

मतलब की दुनिया में, कोन तुम्हारा है,
प्रभु नाम का ही प्यारे, एक सहारा है,
मुक्ति का सीधा सच्चा, रास्ता यही ।। २ ।।

"हर्ष" ये नश्वर काया, खाक में मिलेगी,
आत्मा अमर है तेरी, चोला तो बदलेगी,
ब्रह्म से मिलन होगा, जीव का तभी ।। ३ ।।

(तर्ज : थाली भरके ल्याई...)

सुधरी का है साथी जग में, बिगड़ी का ना कोई रे,
बणती बिगड़े बिगड़ी सुधरे, रीत जगत की याही रे ।। टेर ।।

रावण की जद सुधरी भगतो, लंका गजब बणाई रे,
आँख मीचता बिगड़ी आई, बैरी बणग्यो भाई रे,
कद बिगड़ेली कद सुधरेली, कोई ना जाणे भाई रे ।। १ ।।

हरिश्चन्द्र की बिगड़ी भगतो, राजा सूं बो डोम बण्यो,
दशरथ जी की आँख को तारो, बन बन भटक्यो भोत घणो,
नेम धरम की नाव ही बाकाँ दुखड़ा दूर कराई रे ।। २ ।।

"हर्ष" गोपियाँ की सुधरी तो, साथी बण्यो कन्हाई जी,
बिगड़ी आई छोड़ सिसकता, चल्यो गयो यदुराई जी,
बिगड़ी सुधरी सागी बहणा, एक गई इक आई रे ।। ३ ।।

(तर्ज : खइके पान बनारस वाला...)

खइके भंग का बड़का गोला,
छम छम नाचे बम बम भोला,
ये तो नाचे नो नो ताल, चलता टेढ़ी मेढ़ी चाल,
जटा में गंगा बिठाने वाला-२ ।। टेर ।।

मेरे राम दुहाई , कैसी मुश्किल ये पड़ गई हाय, हाय, हाय,
काहे भांग छनाई, थोड़ी ज्यादा ही चढ़ गई हाय, हाय, हाय,
पहने है बाघ की छाला, नाचे है डमरू वाला,
जाने कोन घड़ी में पी गया, भर भर के ये प्याला,
मैया, गोरां का-२, हुआ बुरा हाल ।। जटा में गंगा... ।। १ ।।

गोरां मैया बेचारी, तेरी सूरत से डर गई हाय, हाय, हाय,
भोला भांग तुम्हारी, माँ के दिल से उतर गई हाय, हाय, हाय,
ना घोटुगीं रे भोला, तेरा ये भांग का गोला,
अब जो मुझसे भांग पिसाये, होगा बड़ा झमेला,
मैया गोरां ने-२, किया ऐलान ।। जटा में गंगा... ।। २ ।।

देख भोले का हुलिया, मैया उनपे बिगड़ गई हाय, हाय, हाय,
सुनके मैया की बतियाँ, भांग उनकी उतर गई हाय, हाय,हाय,
माँ बोली सुन भण्डारी, मैं घोटत घोटत हारी,
अबकी जो तू भंगिया खाये, होगा झंझट भारी,
मैया गोरां ने-२, किया कमाल ।।
जटा में गंगा... ।। ३ ।।

देख मैया का मुखड़ा, भोले बाबा भी डर गये हाय, हाय, हाय,
छोड़ो छोड़ो बिगड़ना, माँ के आगे पसर गये हाय, हाय, हाय,
सुन गणपत की महतारी, मुझे दो चीजें है प्यारी,
पहला नम्बर तेरा आये, दूजी भांग की बारी,
"हर्ष" गोरां का-२, मिटा मलाल ।।
जटा में गंगा... ।। ४ ।।

श्री शंकर वन्दना

(तर्ज : श्याम देने वाले...)

देव बड़ा आला है बाबा भोला भाला है-२,
पहने है सर्पों की माला, मेरा भोला बड़ा है निराला ।।

तन पे विभुती है माथे पे चन्दा,
इनकी जटाओं में बहती है गंगा,
भांग की खुमारी है, भोले जी को प्यारी है,
पीते है भर भर के प्याला ।। १ ।।

आक धतूरे का भोग लगाये,
धूनी लगाये और चिमटा बजाये,
बाघम्बर धारी है, नन्दी की सवारी है,
अजी बैठे बिछाये मृग छाला ।। २ ।।

"हर्ष" हमारे हैं भाग्य विधाता,
भूतों के स्वामी है भगतों के दाता,
भोले त्रिपुरारी है, महिमा बड़ी भारी है,
अपने भगतों का है रखवाला ।। ३ ।।

(तर्ज : गणेश के पापा...)

बाबा श्याम धणी के -SSS-, उत्सव मे हैं आज पधारे,
ओ भोले नाथ दानी,
गोदी गणपत लेके SSS-२, गोरां के संग आज पधारे,
ओ भोले नाथ दानी ।। टेर ।।

तन पे भभूत सोहे, माथे पे चन्दा,
भष्मी रमाये बैठे, भेष है मलंगा,
अब तो चमके हैं SSS-२, हम दीनों
की तकदीर के तारे, ओ भोले...।।

हाथ में त्रिशूल सोहे, नन्दी की सवारी,
काँधे पे काला विषधर मारे फुंफकारी,
तेरे सेवक मिलके SSS-२ तेरी जै जै कार पुकारे, ओ भोले...।।

बर्बरीक भोले तेरी, किरपा जो पाया,
कलयुग में श्याम बाबा, तभी वो कहाया,
तेरे शक्ति रूपी SSS-२, तीन वाण तरकश में धारे, ओ भोले...।।

सेवक का मान रखने, आये हैं विधाता,
"हर्ष" चरण मे तेरे, सिर को झुकाता,
आके हम दीनों के SSS-२, सारे बिगड़े काज संवारे, ओ भोले...।।

श्री शंकर वन्दना

(तर्ज : सब कोई मिलाके पीते है...)

भंगिया तुम्हारी लाये हैं, हाथों से छान के-२,
लोटा तू भरके पी जरा-२, मस्ती में टान के ।। टेर ।।

तू है दिवाना भंग का, लाये हैं ये मलंग-२,
अब तो पिलाके जायेगें-२, बैठे हैं ठान के ।। १ ।।

सावन बड़ा नशीला है, थोड़ा सा है सुरंग-२,
थोड़ा नशा तू और कर-२, भगतों की मान के ।। २ ।।

बूंटी चढ़ेगी जब तुझे, ऐसा जमेगा रंग-२,
चरचे करेगा ये जहाँ-२, भोले की शान के ।। ३ ।।

भगतों के मन की आस्था, भोले तेरी ये भंग-२,
हाथों से पीले "हर्ष" के -२, प्रेमी तू जान के ।। ४ ।।

श्री शंकर वन्दना

(तर्ज : तेरो मंदिर छोटो पड्ग्यो रे...)

भोला तू कोन्या माने रे, माँ ने घणो सतावे-२,
रात रात भर गोरां माँ सूं, बाबा भांग पिसावे ।। टेर ।।

रोज पीसतां सिल और बट्टो, काया दुखण लागी,
महलां की या राजकुमारी, तू जोगी बैरागी,
जुलम करे नाजुक हाथां पर, बिल्कुल दया न आवे ।। १ ।।

नोकर चाकर भोत घणेरा , बाबुल के घर माही,
राजा की या लाडो बेटी, फक्कड़ के संग ब्याही,
माँ के कोमल हाथां माहीं, क्यूं छाला पड़वावे ।। २ ।।

तीन लोक को मालिक है तू, तेरे क्याँको तोड़ो,
माल मलीदा खाओ बाबा, भांग धतूरा छोड़ो,
"हर्ष" मायके जावे ली जद, कीसूं भांग पिसावे ।। ३ ।।

श्री शंकर वन्दना

(तर्ज : बैठे है श्री राम...)

रूठी क्यूं गोरां, युँ तरसाओ ना,
क्युँ जिद् पे अड़ी हो, मान जाओ ना ।। टेर ।।

आज सुबह से भंग न खाई सिर चकराये मेरा,
बेबस और लाचार खड़ा हूँ भंगिया के बिन गोरां,
मना करो ना बूँटी पीस लाओ ना ।। १ ।।

भांग का भोग लगाकर ही मैं धूनी अलख जगाऊँ,
लाख जतन करके भी गोरां ध्यान लगा ना पाऊँ,
थोड़ी सी तो घोट के मुझे पिलाओ ना ।। २ ।।

दो अनमोल नगीने तेरे डमरूधर के पास है,
तेरा साथ मिला है पहला दूजी भंग की प्यास है,
"हर्ष" कहे गोरां रानी अब मान जाओ ना ।। ३ ।।

श्री शंकर वन्दना

(तर्ज : मिलती है जिन्दगी...)

शंकर दयालू दूसरा तुमसा कोई नहीं,
देने से पहले तू जरा, क्यूं सोचता नहीं ।। टेर ।।

भष्मासुर ने भक्ति से, तुझको रिझा लिया,
वरदान भष्म करने का, दानव ने पा लिया,
तुझको ही भष्म करने की, पापी ने ठान ली ।। १ ।।

गिरिजा की जिद पे था बना, सोने का वो महल,
महुरत कराने आया था, रावण पिता के संग,
सोने की लंका दुष्ट की, झोली में डाल दी ।। २ ।।

मंथन की गाथा क्या कहें, क्या क्या नहीं हुआ,
अमृत पिलाया देवों को, और विष तू पी गया,
देवों का देव "हर्ष" तू , दुनिया ये जानती ।। ३ ।।

श्री शंकर वन्दना

(तर्ज : वो देखो वो देखो...)

हिमाचल की गलियों में उत्सव छाया है,
मेरा भोला दानी देखो नन्दी चढ़ आया है,
नन्दी चढ़के आया बाबा नन्दी चढ़के आया है,
वो देखो-वो देखो-वो देखो, भोला बाबा दुल्हा बनके आया है ।।

अंग भभूत सोहे नन्दी की सवारी, हाथ में त्रिशूल सोहे तेरे जटाधारी,
भाँग धतूरे का तू भोग लगाया है ।। १ ।।

गले में भुजंग बाबा चिमटा बजाये, होले होले नन्दी तेरा ठुमका लगाये,
गोरां जी को ब्याहने देखो जगपति आया है ।। २ ।।

देव नाचे-भूत नाचे-नाचे जगसारा, भोले की बारात का है अजब नजारा,
धरती अम्बर नाचे कैसा आनन्द छाया है ।। ३ ।।

बनके बाराती आये भक्त ये तुम्हारे, भोले तेरी किरपा से होगें वारे न्यारे,
"हर्ष" नसीबों से ये शुभ दिन आया है ।। ४ ।।

(तर्ज : स्वर्ग से सुन्दर...)

आन पधारो झूले में माँ भक्त करे मनवार,
तुझे तेरे लाल बुलाये, प्रेम से डोर हिलाये ।। टेर ।।

झूला सजाया हमने, आँगन में तेरा,
सूना पड़ा है तुझ बिन, करले बसेरा,
आज तेरे भगतों को दादी है तेरा इंतजार ।। १ ।।

चमक रहा है नभ में, प्यारा सा चन्दा,
चम्पा चमेला महके, और रजनी गंधा,
आज तेरे श्रृंगार में दादी गजरों की भरमार ।। २ ।।

अगर और चन्दन का, पलना बना माँ,
लाज हमारी आके, रखना जरा माँ,
मान बढ़ादे "हर्ष" हमारा आजा तू इकबार ।। ३ ।।

श्री दादी जी वन्दना

(तर्ज : चूड़ी जो खनकी हाथों में...)

करस्याँ सिन्धारा थारा मावड़ी,
बेगा बेगा सा पधारो मैया आज, भवानी थारा लाड करां ।।

दादी थारे स्वागत में चन्दन चौक पुरायो है,
घणे चाव सूं टाबरिया न्यूतो आज भिजायो है,
झाँकी दिखाओ म्हाने सोवणी ।। १ ।।

चान्दी री चौकी पर माँ थाने आज बिठास्याँ ऐ,
सोणा सोणा गजरा सूं म्हे सिणगार सजास्याँ ऐ,
पायल पहरावां छम छम बाजणी ।। २ ।।

लाल सुरंगी मेहन्दी सूं थारा हाथ रचावांला,
सगला सेवक हाथा सूं थाने आज जिमांवाला,
दादी उढ़ास्यां थाने ओढ़णी ।। ३ ।।

"हर्ष" भवानी बेगा सा पीहर थाने आणो है,
नाती पोता ने दादी आशिष देकर जाणो है,
किरपा दिखाओ मैया मोकली ।। ४ ।।

श्री दादी जी वन्दना

(तर्ज : किसने किया सिंगार साँवरे...)

कुटिया मेरी माँ सूनी पड़ी,
मैं रस्ता निहारूं तू आ मावड़ी ।। टेर ।।

बड़े जतन से दादी मैंने कुटिया आज बुहारी,
पलक उठाकर पल पल मैया देखुं राह तुम्हारी,
माँ चौखट पे कबसे है आँखे गड़ी ।। १ ।।

मैं निर्धन क्या तुझे खिलाऊँ सब है तेरी माया,
जैसा भी बन पाया मैया मैंने आज बनाया,
माँ बेटे पे किरपा तू करना थोड़ी ।। २ ।।

तेरे चरणों की धूली से मेरी किस्मत खुल जाये,
शायद मेरी ये झोपड़िया महल सलोना बन जाये,
माँ इकबर तू आजा घड़ी दो घड़ी ।। ३ ।।

"हर्ष" तेरी किरपा से दादी ये बालक तर जाये,
तू आयेगी सोच सोच कर आँख मेरी भर आये,
माँ अँखियो से आँसू की लागी झड़ी ।। ४ ।।

श्री दादी जी वन्दना

(तर्ज : कसमे वादे प्यार वफा...)

गुरसामल के आँगणिये में, आज उदासी छाई रे,
कालजिये की कोर नाराणी, होसी आज पराई रे ।।

माँ गंगा री लाड़ो बेटी, सासरिये ने चाली जी,
हिवड़े माही चाव भरयो है, नैणा माहीं लाली जी,
सखी सहेल्यां, मात पिता की, आख्याँ भर भर आई रे ।। १ ।।

कण्ठ लगाकर माता बोली, कीका लाड लडास्यूँ मैं,
तेरे बिन ऐ लाडो कीने, मन की बात बतास्युँ मैं,
दिल के टुकड़े ने मैं देस्यूं, कैयां आज बिदाई रे ।। २ ।।

माँ बापू ने साँझ सवेरे, गीता कुण सुणावे लो,
बिन तेरे गईया ने तेरी, चारो कुण खुवावे लो,
खून सूं खून जुदा होणे की, बैरन घड़ियाँ आई रे ।। ३ ।।

गांठ बाँधले पिहरिये की, नाक ना नीची करवाजे,
सासरिये के मान के तांई, चाहे जान गवां दीजे,
"हर्ष" मानजे सीख या म्हारी, बाबुल या समझाई रे ।। ४।।

श्री दादी जी वन्दना

(तर्ज : चली काँवड़ियो की टोली...)

चढ़ा मेहन्दी का रंग, रची लाल सुरंग,
दादी किसने ये हाथों में रचाई रे,
तेरे भगतों के मन को माँ भाई रे ।। टेर ।।

सोणी सोणी मेहन्दी लागे दुनिया से न्यारी,
हाथों की हथेलियों में रची प्यारी प्यारी,
मै तो वारी वारी जाऊँ, सारे जग को बताऊँ,
मेहन्दी हाथों की माँ शोभा बन आई रे ।। १ ।।

बड़े ही नसीबों वाला माँ के मन भाये,
जिसका हुकम होवे मेहन्दी वो लगाये,
दादी मुझे भी बुलाले, हाथों मेहन्दी मण्डाले,
मैंने तुझसे माँ अरजी लगाई रे ।। २ ।।

मेहन्दी का तो बस दादी करके बहाना,
"हर्ष" हमें तो तेरा दर्शन पाना,
आजा हुकम सुनादे, मेरा मान बढादे,
तूने कितनों की आस पुराई रे ।। ३ ।।

श्री दादी जी वन्दना

(तर्ज : चांद आहे भरेगा...)

चान्द भरमा रहा है फूल मुस्का रहे है,
देख के माँ चुनरिया आज शरमा रहे है ।। टेर ।।

आरी तारी की लड़ियाँ, लम्पी लूमा की कड़ियाँ,
हीरे मोती जड़े हैं, एक से एक बढ़िया,
आसमाँ के परे सब, देव गुण गा रहे हैं ।। १ ।।

सोहे किरणों की लाली, देख चुनरी निराली,
होश सब खो चुके हैं, नजरें जिसने भी डाली,
आज सुधबुध ही सारी, देख बिसरा रहे हैं ।। २ ।।

भाव भरपूर है माँ, गजब का नूर है माँ,
"हर्ष" रहना कभी ना, नजर से दूर तू माँ,
देव गण मिलके सारे, फूल बरसा रहे हैं ।। ३ ।।

श्री दादी जी वन्दना

(तर्ज : आ लौट के आजा)

जीमो जीमो म्हारी राणीसती माँ, भगत थाने आज जिमावे ऐ,
आज जिमावे, आज जिमावे, आज जिमावे ऐ ।। टेर ।।

गंगा जल सूं चरण पखाराँ, चन्दन चौक पुरावाँ,
चान्दी री चौकी पर मैया, थाने आज बिठावाँ,
बेगा बेगा थे पधारो म्हारी माँ, भगत थाने... ।। १ ।।

बुन्दिया भुजिया बरफी पेड़ा, थारे भोग लगावाँ,
छप्पन भोग छत्तीसों मेवा, थाने आज जिमावाँ,
राखो राखो हे भवानी म्हारी लाज, भगत थाने... ।। २ ।।

केशरिया माँ खीर बणाई, देसी घी रो सीरो,
जीम्या पाछे प्रेम सूं चाबो, थे कलकत्ती बीड़ों,
दादी कर दीन्ही पड़दे री ओट, भगत थाने... ।। ३ ।।

रुच रुच भोग लगाओ मैया, म्हारो मान बढ़ाओ,
सेवक रस्तो जोय रहयो है, "हर्ष" थे बेगा आओ,
बैठ्या पलक बिछायाँ म्हे तो आज, भगत थाने... ।। ४ ।।

श्री दादी जी वन्दना

(तर्ज : गाड़ी वाले मुझे बिठाले...)

झुंझणु वाली जग सेठाणी, बंदन बारम्बार, तेरा जैकारा है,
जै कारा है जै कारा राणी सती तेरा जैकारा ।। टेर ।।

धोखे से माँ छुप करके पापी घात लगाये थे,
समर भूमि में तन धन जी वीर गति को पाये थे,
टूट पड़ी थी दुष्टों पर तू ले नंगी तलवार तेरे जैकारा है,
जै कारा ... ।। १ ।।

दुष्टों की रणभूमि में बहुत बुरी माँ गति हुई,
सत की रक्षा करने तू पति के संग में सति हुई,
भष्मी लेकर राणा पहुँचा, जालीराम के द्वार तेरा जैकारा है,
जै कारा... ।। २ ।।

धाम झुंझणु में तेरा मंदिर बड़ा निराला है,
दिव्य तेज से तेरे माँ जग में आज उजाला है,
"हर्ष" करे जै कार तुम्हारी करना माँ स्वीकार तेरा जैकारा है,
जै कारा... ।। ३ ।।

श्री दादी जी वन्दना

(तर्ज : बाबुल का ये घर...)

तीज्याँ के सिन्धारे में, दादी ने बुलावांगा,
मैयाजी का रल मिल के, म्हे लाड लडावांगा ।। टेर ।।

पहल्यां तो चन्दन सूं, म्हे चौक पुरास्यां जी,
आंगण में केशरिया, अन्तर छिड़कास्याँ जी,
चान्दी री चौकी पर, दादी ने बिठावांगा ।। १ ।।

पाछे म्हे फूलां रा, सोणा हार बणास्यां जी,
चान्दी री प्याली में , म्हे मेहन्दी घुलास्यां जी,
तारा जड़ी चुन्दड़ली, दादी ने उढ़ावांगा ।। २ ।।

बुन्दिया व भुजिया रा, म्हे थाल सजास्याँ जी,
खीर और पूड़ा रो, माँ के भोग लगास्याँ जी,
जीमेला जद दादी, म्हे पंखो डुलावांगा ।। ३ ।।

बरसां पुराणी माँ, आके रीत निभाओ जी,
अरजी यो "हर्ष" करे, म्हारो मान बढ़ाओ जी,
मैया रे स्वागत में, म्हे पलक्यां बिछावांगा ।। ४ ।।

श्री दादी जी वन्दना

(तर्ज : नखरालो देवरियो...)

तेरे सिर पे सदा युँ माँ, चुनरिया लहराये,
युग युग तक जग सारा, भवानी तेरा गुण गाये ।। टेर ।।

ये अनमोल सुहाग निशानी तन पे तेरे सोहे,
लाल रंग को देख तुम्हारे बेटे सुधबुध खोये,
तेरी लाल चुनरिया को, निरख हम सुख पायें ।। १ ।।

बड़ी अनोखी बड़ी निराली चुनड़ी ये मतवाली,
इस चुनड़ी में छुपी हुई है भगतों की खुशहाली,
तेरी लाल चुनरियाँ माँ, हमारे बड़ी मन भाये ।। २ ।।

"हर्ष" कहे माँ तेरी चुनड़ी जब जब भी लहराई,
दुष्टों की ये काल बनी भगतों की लाज बचाई,
तेरी लाल चुनरिया पे, भगत वारी वारी जाये ।। ३ ।।

श्री दादी जी वन्दना

(तर्ज : मीठे रस सू भरयोड़ी...)

थाने चूनड़ी माँ टाबरिया उढ़ाणे आया-२,
म्हे तो दादी थारा लाड लडाणे आया ।। टेर ।।

सावन का सिन्धारा दादी म्हासुँ आज कराले,
घणे चाव सूँ टाबर आया चरणा माही बिठाले,
थाने नैणा माही आज बसाणे आया ।। १ ।।

घणी राचणी मेहन्दी दादी म्हासुं आज मण्डाले,
रोली मोली गजरो ल्याया चुड़लो हाथ घलाले,
थारो सोणो सो सिणगार सजाणे आया ।। २ ।।

छप्पन भोग छत्तिसों मेवा दादी भोग लगाले,
टाबरियाँ से "हर्ष" मावड़ी थोड़ी प्रीत निभाले,
थारे चरणां माही शीश झुकाणे आया ।। ३ ।।

(तर्ज : एक डाल पर तोता बोले...)

प्रेम भाव से सेवक आया आके शीश झुकाया,
बड़े प्यार से आज रंगा के तेरी चुनरिया लाया ।
ओढ़ो ओढ़ो, दादी ओढ़ो-२ ।। टेर ।।

भाव भरी माँ तेरी चुनरिया देवों ने रंगवाई,
ब्रह्मा विष्णु शंकरजी ने तुमसे अरज लगाई,
तुझसे अर्ज लगाई, ओढ़ जरा महामाई,
ये अलबेली लाल चुनरिया तुझको उढ़ाने आया ।। १ ।।

किरणों की लाली माँ दमके चमके चांद सितारे,
देख इसे माँ शरमा जाये धरती अम्बर सारे,
धरती अम्बर सारे, सूरज चान्द सितारे,
प्यार भरी सौगात तुम्हारे दरपे चढ़ाने आया ।। २ ।।

"हर्ष" भगत की लाज तू रखले मैया झुंझणुवाली,
तेरा सेवक आज खड़ा है बन के दरपे सवाली,
बनके दरपे सवाली, सुनले झुंझणुवाली,
आज करो स्वीकार भवानी बालक दरपे आया ।। ३ ।।

श्री दादी जी वन्दना

(तर्ज : तेरो मंदिर छोटो पड़ग्यो रे...)

भादो को मेलो आग्यो रे, दादी तने बुलावे,
बेगो सो तू करले त्यारी-२, मतना देर लगावे ।। टेर ।।

मावस के दिन गाँव झुंझणुं मेलो लागे भारी,
दादी जी के मंदरिये की शोभा होवे न्यारी,
चरणां जाके धोक लगाले-२, किस्मत ही खुल जावे ।। १ ।।

भोत बड़ो है बड़भागी तू दादी तने बुलावे,
टाबरियां के सांगे क्यूं ना गठ जोड़े से जावे,
दादी जी ने जाय मनाले-२, पौ बारह हो जावे ।। २ ।।

"हर्ष" बावला टिकट कटाले, मतना सोच विचारे,
झुंझनुवाली दादी तेरा अटक्या काज सुधारे,
दादी जी की किरपा पाले-२, झँझट ही मिट जावे ।। ३ ।।

श्री दादी जी वन्दना

(तर्ज : चल चलिये चल चलिये...)

भादो को मेलो आ गयो, थे बेगा बेगा चालो-२,
थे मतना करो उवाँर रहग्या,मेले का दिन चार,
दादी थारी बाट उड़ीके, दादी को हेलो आ गयो,
थे बेगा बेगा चालो... ।। टेर ।।

सब काम छोड़ दे भाई, दादी जी तने बुलाई,
मैया ने जाय रिझाले, चरणां में धोक लगाले,
भगतां रो मन हरषा गयो, थे बेगा बेगा चालो... ।। १ ।।

थे गठजोड़े सूं चालो, चुनड़ी ने जाय चढ़ाल्यो,
रूत भादुड़े री आई, करसी माँ आज सुणाई,
संदेशो माँ को आ गयो, थे बेगा बेगा चालो... ।। २ ।।

ऐ "हर्ष" करे क्यूं देरी, किस्मत खुल जासी तेरी,
जो बड़भागी वो जावे, दादी की किरपा पावे,
इब थारो नम्बर आ गयो,थे बेगा बेगा चालो... ।। ३ ।।

(तर्ज : लागे वृन्दावन नीको...)

मंदरियो प्यारो प्यारो लागे,
दादी थारो मंदरियो प्यारो लागे ।। टेर ।।

मकराणे को बण्यो माँ देवरो,
मोर पपीहो नाचे ।। १ ।।

रतन सिंहासन दादी जी विराजे,
छत्तर हजारां साजे ।। २ ।।

तारां जाड़ी थारे चढ़े माँ चुनड़ी,
मेहन्दी सुरंगी साजे ।। ३ ।।

बुन्दिया भुजिया खीर और पूड़ा,
भोग सजे थारे आगे ।। ४ ।।

मावस ने "हर्ष" धोक लगावे,
चौदस रात्युँ जागे ।। ५ ।।

श्री दादी जी वन्दना

(तर्ज : अपने आंचल की छैया...)

ममता की शीतल छाया में जब भी मुझे सुलाओं माँ,
तुम लोरी की जगह दादी के मीठे भजन सुनाओ माँ,
रोज सबेरे जै दादी की बोल के मुझे जगाओ माँ,
तुम लोरी की जगह दादी के मीठे भजन सुनाओं माँ ।। टेर ।।

समर भूमि में माँ ने कैसे दुष्टों को ललकारा था,
चण्डी रूप बनाकर उनको मौत के घाट उतारा था,
कैसे दादी सति हुई थी ये बातें समझाओं माँ ।। १ ।।

एक बार मुझको भी ले चल मेरी आस पुरादे तू,
भादो की मावस में मुझको माँ का भवन दिखादे तू,
दादी की चौखट पे मष्तक मेरा भी टिकवाओ माँ ।। २ ।।

जहाँ पे माँ का उत्सव होवे मुझको भी तू ले जाना,
मंगल पाठ में दादी जी के मुझको भी माँ बिठलाना,
भजनों की गंगा में गोता, मुझको भी लगवाओ माँ ।। ३ ।।

वादा करले मावस के दिन घर में ज्योत जगाओगी,
"हर्ष" कहे तुम खीर और पूड़ा माँ के भोग लगाओगी,
दादी का प्रसाद बड़े ही प्यार से मुझे खिलाओ माँ ।। ४ ।।

(तर्ज : रघुपति राघव...)

मरूभूमि को करूँ प्रणाम, जिसमें पावन झुंझनु ग्राम,
जिसमें पावन झुझनु ग्राम, राणी सती मैया का धाम ।।

भगतों का दामन माँ भरती,
सकल मनोरथ पूरण करती,
दर्शन से मिलता आराम ।। १ ।।

सुमिरन से मन को सुख मिलता,
दर्शन से पुल्कित हो उठता,
नमन करो सब आठों याम ।। २ ।।

चरणों की धूली सिर धर लो,
जीवन अपना सुखमय करलो,
ध्यान लगाओ सुबहो-शाम ।। ३ ।।

"हर्ष" जो माँ का भजन करेगा,
दुष्कर्मों से दूर रहेगा,
मन से जपना माँ का नाम ।। ४ ।।

श्री दादी जी वन्दना

(तर्ज : हम तुमको निगाहों में...)

माँ घर में हो हमारे, मन्दिर तुम्हारा प्यारा,
जो देखे उसे लागे, घर स्वर्ग सा हमारा ।। टेर ।।

रात दिन तेरी जहाँ पर ज्योत जलती हो,
माँ तेरी किरपा हमे हर रोज मिलती हो,
किरपा से तेरी मैया, हम सबका हो गुजारा ।। १ ।।

तू मेरे परिवार की मुखिया बनेगी माँ,
हाथ तेरे प्यार का सिर पे धरेगी माँ,
तेरे बच्चों को मिलेगा, तेरा हरदम ही सहारा ।। २ ।।

तेरे आने से माँ किस्मत जाग जायेगी,
हर मुसीबत घर से मेरे भाग जायेगी,
तेरा "हर्ष" माँ जपेगा, बस नाम ही तुम्हारा ।। ३ ।।

(तर्ज : आ गई रे आ गई टोली ग्वाल बाल...)

माँगले रे माँगले दादी से तू माँगले,
मैया देने आई है जी भरके माँगले ।। टेर ।।

माँ से जो माँगो सब कुछ है मिलता,
खुशियों से सबका दामन है भरता-२,
भगतों पे दादी इतना लुटाती,
माँगने की फिर से नौबत ना आती-२,
माँ के जैसा दूजा ना है सारे जग में जानले ।। १ ।।

माँ से बड़ा ना दानी है जग में,
माँ का ना कोई सानी है जग में-२,
बच्चों का हरदम मंगल ही सोचे,
बेटों के आकर आँसू माँ पोंछे-२,
चाहे जितना लेले तेरे मन की तू निकाल ले ।। २ ।।

ममता जो चाहो ममता मिलेगी,
सिरपे दया का हाथ धरेगी-२,
ये है दयालू करूणा की सागर,
"हर्ष" भरेगी तेरी भी गागर-२,
बदलेगी तकदीर तुम्हारी झोली तू पसार ले ।। ३ ।।

श्री दादी जी वन्दना

(तर्ज : घड़लो थामले देवरिया...)

मेहन्दी राचणी सौणी सी, मण्डाले मेरी माँ,
टाबरिये ने झुंझनु बुलाले मेरी माँ ।। टेर ।।

खूब जतन सूं घोल के ल्यास्युं,
लाल सुरंगी हाथां रचास्युं,
तेरे दास की या आस पुरादे मेरी माँ ।। १ ।।

मेहन्दी की नहीं माँगु मण्डाई,
दे दीज्यो थारे मन की चाही,
सिरपे प्यार से तू हाथ फिरादे मेरी माँ ।। २ ।।

मेहन्दी माण्डण दर थारे आऊँ,
मावड़ली थारा दरसण पाऊँ,
मेरे कालजे की प्यास बुझादे मेरी माँ ।। ३ ।।

"हर्ष" ज्यूँ मेहन्दी हाथां रचेगी,
टाबरिये सूं माँ प्रीत बढ़ेगी,
तेरे लाल ने चरणां में बिठाले मेरी माँ ।। ४ ।।

(तर्ज : लुट रहा लुट रहा...)

रच गई रच गई रच गई रे,
राचणी माँ मेहन्दी रच गई रे ।। टेर ।।

जादूगरी, ये मतवारी, प्यारी प्यारी लागे है,
लाल सुरंगी, रची हथेली, ज्यूँ फुलवारी लागे है,
दादी जी के हाथों को, लाल रंग में रंग गई रे ।। १ ।।

हे बड़भागन, प्यारी मेहन्दी, दादी के मन तू भाई,
बड़े प्रेम से, माँ ने तुमको, अपने हाथों लगवाई,
सोणी सोणी रचके तू दादी के मन बस गई रे ।। २ ।।

"हर्ष" कहे ओ, मेहन्दी मेरी, दादी से इतना कहना,
मेहन्दी वाले, हाथ हमारे, सिरपे माँ यूँही रखना,
भगतों की अरजी सुनके, दादीजी किरपा कर गई रे ।। ३ ।।

(राग : स्वरचित)

सति दादी तुम्हारे चरणों में,
थोड़ी सी जगह, हमको दे ।। टेर ।।

श्री चरणों का मैं हुँ पुजारी, चाकर मुझको रखले माँ,
सेवा का मौका माँ देकर, लाज मेरी भी रखले माँ,
चौखट पे तेरी ऐ जगदम्बे, थोड़ी सी... ।। १ ।।

अपने हाथों से मैं मैया, मंदिर तेरा बुहारूगां,
फूलों का सिंगार करूगां, तुझको खूब सवाँरूगां,
मंदिर में तेरी ऐ जगदम्बे, थोड़ी सी... ।। २ ।।

पापी कपटी नालायक हूँ, पर माँ तुम्हारा बेटा हूँ,
"हर्ष" बड़ी ही आस लिये माँ, चौखट पे मैं बैठा हूँ,
हृदय मे तेरे हे जगदम्बे, थोड़ी सी... ।। ३ ।।

(तर्ज : राजस्थान की पावन)

सतियों का जहाँ युगों युगों से होता है गुणगान,
यही वो भारत देश महान-२ ।। टेर ।।

सत की परिक्षा लेने आये, "ब्रह्मा विष्णु और भोला"-२,
सतवंति माँ अनुसुया ने, "बालक उन्हें बना डाला"-२,
सति के आगे बोने हो गये, वो तीनो भगवान, यही वो भारत... ।।

महलो को तज के सीता ने, "राम का साथ निभाया था"-२,
रावण जैसा भूप भी माँ के, "सत को डिगा न पाया था"-२,
कूद पड़ी अग्नि में माता, रखी सत की आन, यही वो भारत... ।।

सर्पदशं से सत्यवान ने, "अपने प्राण गवां डाले"-२,
सत के बल पे सावित्री ने, "विधि के नियम बदल डाले"-२,
भैंसे चढ़ यमराज पधारें, दिये प्राणों का दान, यही वो भारत... ।।

कलयुग में माँ राणीसती की, "घर घर पूजा होती है"-२,
सतियों के इस दिव्य तेज से, "अन्धकार में ज्योति है"-२,
"हर्ष" भगत का श्री चरणों में बारम्बार प्रणाम, यही वो भारत... ।।

श्री दादी जी वन्दना

(तर्ज : मैया का चोला...)

स्वागत की शुभ घड़ियाँ आई, मंगल गाओ, बांटो बधाई,
राणीसती माँ घर आई, भक्तों का उद्धार हो गया ।। टेर ।।

बड़े नसीबों से दादी जी घर में आज पधारी,
भगतों ने मिलके करली है स्वागत की तैयारी,
चान्दी की चौकी पे, माँ को बिठायें, दादी का मिलके, लाड लडायें,
ममता लुटाने वाली आई, भगतों... ।। १ ।।

बड़े चाव से दादीजी के मेंहदी हाथ रचायें,
लाल सुरंगी तारों वाली चुनरी आज उढ़ायें,
फूलों के गजरे, माँ को पहनाओं, हाथों से अपने, माँ को सजाओ,
किरपा बरसाने वाली आई, भगतों... ।। २ ।।

बड़े दिनों से शुभ दिन आया मंगलाचार सुनाओ,
"हर्ष" कहे सब शीश झुकाकर माँ की किरपा पाओ,
चरणों की धूली, माथे लगालो, बरसों के सोये, भाग्य जगालो,
बिगड़ी बनाने वाली आई, भगतों... ।। ३ ।।

श्री दादी जी वन्दना

(तर्ज : आज मेरे यार की शादी है...)

शान माँ की खूब निराली है-२
रतन सिंहासन बैठी दादी झुंझनुवाली है ।। टेर ।।

मेरी दादी के जैसी, नहीं कोई और दूजी,
बैठ कर ऊँचे आसन, करे दुनिया पे शासन,
माँ के द्वार पे भक्त मनाते रोज दिवाली है ।। १ ।।

जिसे जग न रूलाया, गले इसने लगाया,
जिसे किस्मत ने मारा, दिया दादी ने सहारा,
माँ के द्वार से हँसकर जाते सभी सवाली है ।। २ ।।

बड़ा है नाम माँ का , बड़ा है काम माँ का,
जो मन से इसे बुलाये, ये पल में दौड़ी आये,
माँ के द्वार से "हर्ष" कोई ना आया खाली है ।। ३ ।।

(तर्ज : जाग उठ अब हे भवानी...)

आ गया हूँ हे भवानी, दुनिया से मैं हार के,
हारे को मिलता सहारा, जननी तेरे द्वार पे ।। टेर ।।

दर बदर की मै भवानी, ठोकरे खाता रहा,
गैरों ने लूटा है मुझको, अपनो ने रूसवा किया,
हे जयन्ति ऽऽऽ-२, सिरपे मेरे आ दया का हाथ दे ।। १ ।।

प्यार के बदले में माता, अब तलक धोखे मिले,
जिनसे मैंने हँसना सींखा, आज वो रोते मिले,
हे दयालु ऽऽऽ-२, जननी आके लाल को तू प्यार दे ।। २ ।।

छोड़ कर अब तेरा द्वारा, मैं भला जाऊँ कहाँ,
है पराया जग ये सारा तू ही तो मेरी है माँ,
हे भवानी ऽऽऽ-२, "हर्ष" का संकट में माता साथ दे ।। ३ ।।

(तर्ज : चलो रे डोली उठाओ कहार...)

चली रे बेटों की आँखो से धार, मैया विदा की रूत आई ,
टूटा है भगतों के दिल पे पहाड़, मैया विदा की रूत आई ।।

नवरातों में जब तू आई, आँगन में माँ खुशियाँ लाई,
मैया हमारा कोई जोर नहीं है, माँ की विदा की घडिया आई,
भगतों के दिल पे चली रे कटार, मैया विदा... ।। १ ।।

रोये है आँखे मतवाली, जायेगी अब मेहराँवाली,
जगमाता हमें छोड़ चली, सिंह की सवारी शान निराली,
बरछी हुई रे कलेजे के पार, मैया विदा... ।। २ ।।

अँखियो से बरसे है बदरिया, जियरा में चमके है बिजुरिया,
काहे हमें छोड़ चली भवानी, पर्वतों पे ऊँची माँ अटरिया,
करके चली आज सोलह श्रृंगार, मैया विदा... ।। ३ ।।

सूनी हुई बेटों की हवेली, मात भवानी चल दी अकेली,
इतना वादा करके जाना, नवरातों में फिर से आना,
"हर्ष" करेगा तेरा इन्तजार, मैया विदा... ।। ४ ।।

(तर्ज : देखे मैया रंग हजारों...)

दोहा : शेरो वाली तूने रखली आज हमारी लाज ।
तुझे देखके शरमाये माँ चान्द सितारे आज ।।

नवरातों में भगतो ने माँ तुझसे अर्ज गुजारी,
कर सोलह सिंगार भवानी घर में आज पधारी,
मेरी चमकी है किस्मत आज माँ आई नवरातों में ।। टेर ।।

मुख मण्डल पर तेज निराला, आभा जग से न्यारी,
अष्ट भुजाओ वाली आई, करके सिंह सवारी,
बैठी ऊँचे सिहाँसन आज, माँ आई नवरातों में ।। १ ।।

सूरज की किरणों की भाँति, रूप तुम्हारा दमके,
पैरों में पायलिया बाजे, हाथों चूड़ा खनके,
करे भगतों के दिल पे राज, माँ आई नवरातों में ।। २ ।।

लाल सुरंगी चुनरिया माँ, "हर्ष" तेरी लहराये,
अटल छत्र पे राज तुम्हारा, लाल ध्वजा फहराये,
अपने बच्चों की रखने लाज, माँ आई नवरातों में ।। ३ ।।

(राग रचयिता : प्रवीन बेदी)९८३०४३२६६९

मेरी मैया का आँचल लगे भीगने,
जरा जम करके बरसो घटा बावरी,
तन भिगोती सदा आज मन तू भिगो,
जरा जम करके बरसो घटा बावरी ।। टेर ।।

माँ की सुन्दर रंगोली सजाऊगां मैं,
ऐ घटा काम इतना तू करदे जरा,
मेरा आँगन धुला जा बड़े प्यार से, जरा जम करके... ।।

बड़ी मुद्दत से आई माँ घर में मेरे,
ऐ घटा लाज मेरी तू रखले जरा,
माँ की सेवा मैं जी भरके कर लूं अरी, जरा जम करके... ।।

यूँही अम्बर से अमृत बरसता रहे,
ऐ घटा "हर्ष" की आज सुनले जरा,
चन्द लमहे तो मैया को रूक जाने दे, जरा जम करके... ।।

(राग रचयिता - अरुण दधीच)९९३७०४५९६२

मेरी मैया का आया है बुलावा, दिवाने आजा दौड़ दौड़ के,
अपनी माता को तूने क्यूं भुलाया, दिवाने आजा दौड़ दौड़ के ।।

जालिम दुनिया ठुकराती पर "माता गले लगाती है"-२,
बेटे की ममता में माँ की "आँखे नीर बहाती है"-२,
तू भी माँ की आँख का तारा-२, "तुझको आज बुलाती है"-२,
तेरा बरसों का पुण्य काम आया, दिवाने आजा दौड़... ।। १ ।।

पौडी-पौडी कदम बढ़ाना "मैया की जयकार लगा"-२,
वाण-गंगा के निर्मल जल से "अपने सोये भाग्य जगा"-२,
गर्भजून में जाकर बन्दे-२, "अपने दुखड़े दूर भगा"-२,
ऊँचे भवनों में रहती महामाया, दिवाने आजा दौड़... ।। २ ।।

भरेगी झोली खाली मेरी माँ शेरांवाली ।
सदा तू मौज उड़ाये मनेगी रोज दिवाली ।।
तेरी तकदीर के ताले जरा जाके खुलवाले ।
तू जाके खुद को करदे मेरी मैया के हवाले ।।

जिसने जाकर भरी हाजरी "उसने ही सुख पाया है"-२,
जिसके पैर में छाले पड़ते "दिल में चैन वो पाया है"-२,
"हर्ष" कहे माँ की चौखट पे-२, "जिसने शीश झुकाया है"-२,
उसने जीवन में सब कुछ पाया, दिवाने आजा दौड़... ।। ३ ।।

(तर्ज : मोपे चढ़ा श्याम का रंग...)

मै तो हुआ देख के दंग सजाया किसने माँ,
(किसने सजाया तुझे किसने माँ) ।। टेर ।।

किसने सजाया तेरा गजरा माँ,
आँखो मे लगाया तेरे कजरा माँ-२,
तेरे बड़े निराले ढ़ंग, सजाया किसने... ।। १ ।।

चमक रही माँ तेरी चुनरिया,
छनक रही है तेरी पैजनिया-२,
मेरा थिरक रहा हर अंग, सजाया किसने... ।। २ ।।

खन खन खनके तेरे कंगना,
धन्य हुआ माँ मेरा अंगना -२,
मुझे मिला मैया का संग, सजाया किसने... ।। ३ ।।

नजर किसी की ना लग जाये,
"हर्ष" भगत मैया वारी जाये-२,
मै तो बना रे मस्त मलंग, सजाया किसने... ।। ४ ।।

(तर्ज : खीर चूरमो नितकी खावे...)

हलुवा तो तू रोज ही खाये, साथ में पूड़ी साग माँ,
रूख सूखा सेवक ल्याया, भोग लगाले आज माँ ।। टेर ।।

छप्पन भोग भला माँ कैसे, तेरे भोग लगाऊँ मैं,
साँझ सवेरे जो मैं खाऊँ, वो ही तुझे खिलाऊँ मैं,
इस गरीब की भी रख लेना, आज तू थोड़ी लाज माँ ।। १ ।।

मेवे मिसरी भले न हो पर, भाव भरे है भोजन में,
भगतों के घर रोज तू खाती, आजा मेरे आँगन में,
बेटे की कुटिया में आकर, मान बढ़ा दे आज माँ ।। २ ।।

आल्हा जैसा भक्त नहीं हूँ, ध्यानू जैसा दास नहीं,
छोटा सा सेवक हूँ माता, भक्त तेरा कोई खास नहीं,
"हर्ष" खड़ा है आस लगाये, करदे पूरी आज माँ ।। ३ ।।

(राग रचयिता - अरुण दधीच)९९३७०४५९६२

सुनती है माँ तू सबकी पुकार, दर तेरे आया दुखड़ो से हार,
सिर पे पाप की गठरी धारे SSS-२,
बंद हुए माँ रस्ते सारे, करदे बेड़ा पार SSS-२,
माँ अम्बे भवानी, छोड़ के न जाऊँ तेरा द्वार ।। टेर ।।

रुठी है मुझसे, मेरी ये किस्मत, इतनी माँ कर दे, मुझपे इनायत,
कष्टों से मुझको जल्दी उबार, मुझको दिखादे तेरा दिदार,
सिर पे पाप की गठरी... ।। १ ।।

सुख चैन मेरा, दुनिया ने लूटा, अपनों से मेरा, नाता है टूटा,
महिमा है तेरी अपरम्पार, शरणागत को कर स्वीकार,
सिर पे पाप की गठरी... ।। २ ।।

बड़ा गमगीन हू माँ, दुखों में लीन हूँ माँ ।
मेरे दुखड़े तू हर ले, तेरे आधीन हूँ माँ ।
अगर तूने ठुकराया, मुझे ना गले लगाया ।
बता जाऊँ किस दरपे, शरण मैं तेरी आया ।।.

दरपे खड़ा है माँ, एक बेचारा, आजा भवानी दे दे सहारा,
"हर्ष" की सुनके करूण पुकार, पापी का माँ कर उद्धार,
सिर पे पाप की गठरी... ।। ३ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : कागलिया गहरो गहरो ...)

ओ बाला साँ, बेगा, बेगा आओ जी-२,
थारे राम जी रो छुट्यो जावे धीर,
लखन रा, प्राण बचाओ जी ।। टेर ।।

बेसुध होकर, भाई पड़्यो है,
संकट म्हापे, भोत बड़ों है-२,
थे जाके, बूंटी ले आवो जी ।। १ ।।

भोर होणे सूँ, पहल्याँ आज्यो,
भाई लखन रा, प्राण बचाज्यो-२,
थे मतना, देर लगाओ जी ।। २ ।।

भाई रो दुख, सह नहीं पास्यूँ,
मैं भी म्हारा, प्राण गंवास्यूँ-२,
थे म्हाने, धीर बंधाओ जी ।। ३ ।।

दुख री घड़ियाँ, जद जद आई,
"हर्ष" थे म्हारी, लाज बचाई-२,
थे आके, लाज बचाओ जी ।। ४ ।।

(तर्ज : दिल लूटने वाले जादूगर...)

जिस भजन में होगा राम का नाम,
हनुमान धरेगें पल में ध्यान ।। टेर ।।

श्री राम का जिसमें नाम नहीं, बाबा का वहाँ कोई काम नहीं,
जहाँ राम नाम का हो गुणगान, हनुमान धरेगें... ।। १ ।।

इन्हे राम सिवा कुछ भाये ना, जहाँ राम न हो वहाँ जाये ना,
जिस जगह पे गूँजे राम का नाम, हनुमान धरेगें... ।। २ ।।

ये राम की आँख के तारे है, भाई से बढ़ कर प्यारे है,
जो राम भजेगा आठो याम, हनुमान धरेगें... ।। ३ ।।

जो राम की महिमा गायेगा, हनुमान को हाजिर पायेगा,
ऐ "हर्ष" सुमर ले राम का नाम, हनुमान धरेगें... ।। ४ ।।

(तर्ज : ये गोटेदार लहंगा...)

दिल में श्री राम बसे है संग माता जानकी,
बैठा खड़ताल बजाये रघुवर के नाम की ।। टेर ।।

आठों पहर चौबिसों घण्टे "राम की महिमा गाये"-२,
राम भजन की मस्ती में ये "सुध सारी बिसराये"-२,
मणकों में राम नहीं वो माला किस काम की ।। १ ।।

राम दिवाना राम प्रभु के "अटके काज संवारे"-२,
संकट में ये दौड़ा आये "सारे कष्ट निवारे"-२,
बैठा ये चुटकी बजाये चौखट पे राम की ।। २ ।।

राम लखन माँ सीता की जो "जै जै कार लगाये"-२,
"हर्ष" कहे वो वीर बली की "पलमे किरपा पाये"-२,
मिलके जयकार लगाओ अंजनी के लाल की ।। ३ ।।

(तर्ज : होलिया में उड़े रे...)

देखो रे भगतो कमाल, दोन्यां को प्यारो है रंग लाल,
कपि को मुखड़ो है लाल, मैया को चोलो है रंग लाल ।। टेर ।।

लाल चून्दड़ी मैया जी ने प्यारी,
हनुमत लाल लंगोटे धारी,
चढ़े दोन्या के गजरो लाल ।। १ ।।

लाल हिना माँ के हाथां राचे,
लाल सिन्दूर बाला जी के लागे,
ध्वजा फरूखे देखो लाल ।। २ ।।

लाल टिकी माँ के माथे साजे,
लाल तिलक बाला जी के लागे,
रोली-मोली को रंग लाल ।। ३ ।।

"हर्ष" भगत थारो लाल कुहावे,
चरणा में थारे शीश झुकावे,
मौज मनावे थारा लाल ।। ४ ।।

(तर्ज : मच गया शोर सारी नगरी रे...(मुखड़ा)/
फूलों सा चेहरा तेरा...(अन्तरा)

पड़ गया रावण शंका में, शंका में,
आया कहाँ से वानर हमारी लंका में ।। टेर ।।

तुझकों पकड़ने राक्षस भिजाये,
वापस वो लंका लौट न पाये,
महंगा पड़ा तुमसे पंगा रे, पंगा रे ।। १ ।।

अक्षय ने जाके ज्यूँही ललकारा,
तूने जमी पर पटक दे मारा,
वीर बड़ा है तू बंका रे, बंका रे ।। २ ।।

ब्रह्मा की पाश का मान बढ़ाया,
सोने की लंका को राख बनाया,
"हर्ष" बजे तेरा डंका रे, डंका रे ।। ३ ।।

(तर्ज : राग रचयिता-अरुण दधीच)९९३७०४५९६२

बजरंग बाला मेरा मान कहना,
राम जी से मेरा राम राम कहना,
आते जाते बाबा सुबह शाम कहना,
राम जी से मेरा राम राम कहना ।। टेर ।।

बाँये है जिनके सीता मैया,
पार करेगी मेरी वोही नैया,
सीता मैया को प्रणाम कहना ।। १ ।।

दाहिने है जिनके लक्ष्मण भैया,
बीच में है देखो जग के खिवैया,
दोनों का धरता हूँ ध्यान कहना ।। २।।

रघुवर का तू तो दिवाना है,
चरणों में तेरा ठिकाना है,
"हर्ष" करे है गुणगान कहना ।। ३ ।।

(तर्ज : महफिल में जल उठी शमा...)

बोल अरे बन्दर-२, ये पूछे माता जानकी,
कहां से आया कैसे लाया, मुन्दरी राम की ।। टेर ।।

ना देखा है तुझे अवध में, ना सरयु के घाट पे,
आज से पहले कभी न देखा, रघुनन्दन के साथ में,
है कोई माया-२, उसी रावण शैतान की ।। १ ।।

हनुमत बोले नहीं हुँ छलिया, मैं अंजनी का लाला हूँ,
वन में बना राम का सेवक, उनका मैं रखवाला हूँ,
राम प्रभु ही लाज-२ माँ रखते हनुमान की ।। २ ।।

सौ योजन सागर को कैसे, लाँघ यहाँ पर आया है,
बड़े बड़े दानव है उनसे, कैसे तू बच पाया है,
कैसे हुई रक्षा-२, उनसे तेरे प्राण की ।। ३ ।।

प्रभु कृपा से ही मैं माता, सिन्धु लाँघ यहाँ आया,
भक्त विभिषण से ही मैंने, माता तेरा पता पाया,
करले माँ विश्वास-२, अरज तेरे हनुमान की ।। ४ ।।

चूड़ा-मणी दे सीता बोली, हनुमत उनसे ये कहना,
जनक दुलारी सीता रोये, रह पाये ना राम बिना,
गुमसुम हूँ दिनरात-२, मैं यादों में राम की ।। ५ ।।

"हर्ष" नही दिन दूर वो माता, रघुनन्दन खुद आयेगें,
दानव कुल का नाश करेगें, संग तुमको ले जायेगें,
बोलुं सच्ची बात-२, मुझे सौगंध है राम की ।। ६ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : फागण आयो मन हर्षायो...)

भक्त निराला, अंजनी का लाला,
राम नाम जपते रे, प्रभु मन बसते रे-२ ।। टेर ।।

ध्यान लगावे, हरि गुण गावे, राम राम रटते रे,
प्रभु मन बसते रे-२ ।। १ ।।

राम के सारे, काज सँवारे, संकट हरते रे,
प्रभु मन बसते रे-२ ।। २ ।।

साँझ सवेरे, माला फेरे, राम राम भजते रे,
प्रभु मन बसते रे-२ ।। ३ ।।

"हर्ष" दिवाना, राम ने माना, राम सुमिरते रे,
प्रभु मन बसते रे-२ ।। ४ ।।

(तर्ज : लो आ गई उनकी याद...)

ये जानकी, तड़पे राम, क्यूँ नहीं आये-२ ।। टेर ।।

विरहा में जल रही हूँ पलकें पसार करके,
पत्थर सी बन गई हूँ तेरा इंतजार करके-२,
अंखियाँ ये बह रही हैं, आँसू न सूख जाये ।। १ ।।

हँसती हैं आज मुझ पर, परछाइयाँ भी मेरी -२,
रो रो पुकारे तुझको, तन्हाइयाँ ये मेरी,
मुझको रूला रहे हैं, यादों के तेरे साये ।। २ ।।

मैं तड़फड़ा रही हूँ, पंछी ज्यूं बिन परों के,
पिंजरे में घुट रही हूँ, कबसे निशाचरों के -२,
ऐ "हर्ष" राम के बिन, सीता तो जी न पाये ।। ३ ।।

(तर्ज : अपनी आँखों में बसा कर...)

अपनी पलकों को बिछाकर तेरा इन्तजार करूँ,
क्यू ना आता है मैं रो करके तुझे याद करूँ ।। टेर ।।

मैने बस तुझको बुलाने की दुआ माँगी है,
तेरे दर्शन की मेरे दिल में कसक जागी है-२,
साँवरे तुझको बुलाकर तेरा सत्कार करूँ ।। १ ।।

करमा जैसी तो नही जिद मैं साँवरे जानूं,
नरसी जैसा ना भरोसा है श्याम मैं मानूं-२,
हाय मैं किस तरह से श्याम का दीदार करूँ ।। २ ।।

अब अगर तू ना दिवाने की सुनके आयेगा,
देखना फिर तू मुझे जिन्दा नहीं पायेगा-२,
"हर्ष" मैं कबसे पुकारूँ तेरी मनुहार करूँ ।। ३ ।।

(तर्ज : सोलह बरस की बाली...)

दोहा : खाटू जाकर देखले, झुकती दर पे दुनिया सारी ।
बिगड़ी हुई वहाँ बनती, मिटती है हर लाचारी ।।

अपने भगत की, तू ही सुने फरियाद,
ऐ श्याम तेरी, माला जपुं दिन रात ।। टेर ।।

दुनिया ने लीले वाले, कितने ही गम दिये,
दुनिया की ठोकरों में, अब तलक था पड़ा,
कोई नही था जिसको, दुखड़े मैं कह सकुं,
निष्ठुर बना था बाबा, बिल्कुल ही ये जहाँ,
तुमने ऐ खाटू वाले, दुख मेरे हर लिये,
मेरी, कलाई थामी, बिगड़ी बनाई बात ।। १ ।।

मिलता रहे सदा ही, श्याम तेरा प्रेम यूं,
बेटे पे रखना दाता, हर घड़ी तू दया,
किरपा का हाथ मेरे, सिर पर सदा रहे,
अब तक निभाया तूने, आगे भी तू निभा,
जालिम है दुनिया वाले, रो रो कहे ये दिल,
किस्मत, सवँर ही जाये, जो मिल जाये तेरा साथ ।। २ ।।

चरणों की धूल दे दे, चाकर बना मुझे,
जीवन बिताऊँ अपना, चौखट पे मैं तेरी,
अपनी शरण में ले ले, आ मुझको साँवरे,
यूँही मैं हर पल गाऊँ, महिमा सदा तेरी,
जैसी सजा ओ कान्हा, चाहे तू दे मुझे,
पर "हर्ष" तू दया का, मेरे सिरपे रखना हाथ ।। ३ ।।

(तर्ज : चल मुसाफिर तेरी मंजिल...)

दोहा : दिया है प्यार, साँवरिये कभी, जख्मों को ना देना ।
पुकारूं तो तू आ जाना, मेरी किस्मत जगा जाना ।।

अब कन्हैया मेरी मंजिल, और दूजी ना कोई-२,
तू ही मेरा जीवन धन है, और पूँजी ना कोई ।। टेर ।।

ये जुबां ये धड़कने तो, गा रही तेरा भजन-२,
दम पे तेरे आज रोशन, है दिवाने का चमन,
खोल दे तकदीर को, वो और कुँजी ना कोई ।। १ ।।

रूठना ना तू कभी भी, चाहे रूठे ये जहाँ-२,
साथ तू हरदम निभाना, साँवरे मेरा सदा,
तेरा गुण गाता रहूँ, है और रूचि ना कोई ।। २ ।।

तेरे होते है दिवाने, को भला कैसी फिकर -२,
"हर्ष" की हर पल लगी है, तेरी चौखट पे नजर,
तेरी चौखट के सिवा, ना और देखी है कोई ।। ३ ।।

(राग रचयिता : प्रवीन बेदी)९८३०४३२६६९

अब जाये या तब जायेगी, लाज बचाने आ कान्हा,
एक बार जो चली गई फिर,
आना चाहे मत आना, ओ कान्हा ।। टेर ।।

ओछे करमों का ही फल है, आज मुसीबत ने घेरा,
बुला बुला कर हार गया है, तुझको सेवक ये तेरा, ओ कान्हा,
तेरी मेरी प्रीत है सच्ची, दुनिया को दिखला जाना ।। १ ।।

बहुत बड़ा विश्वास है तुझपे, देख कहीं ये टूटे ना,
निर्बल का ये लाज का गहना, आज जमाना लूटे ना, ओ कान्हा,
जान के मेरे दिल की हालत, हर हालत में आ जाना ।। २ ।।

सोचा क्या बिगड़ेगा मेरा, तुमसा सच्चा साथी है,
लेकिन अब ये मुझको मेरी, भूल नजर ही आती है, ओ कान्हा,
"हर्ष जो तू है सच्चा साथी, दुख में साथ निभा जाना ।। ३ ।।

(तर्ज : न मुँह छुपा के...)

अनोखा जो भी हुआ, श्याम के द्वार हुआ,
हमेशा श्याम की चौखट पे, चमत्कार हुआ ।। टेर ।।

न जाने आज कितने, श्याम के दिवाने हैं,
लबों पे आज सबके, श्याम के तराने हैं,
दिवाना श्याम की-२, चौखट का ये संसार हुआ ।। १ ।।

जहाँ से हार के जो, साँवरे के द्वार गया,
उसी की जिन्दगी को, श्याम ने संवार दिया,
जहाँ मे श्याम जी-२, का सच्चा ये दरबार हुआ ।। २ ।।

निराला देव है ये, "हर्ष" ये हकीकत है,
दिलों पे सेवकों के, श्याम की हुकुमत है,
हमेशा भक्त का-२, बाबा ही मददगार हुआ ।। ३ ।।

(तर्ज : मैं हूँ प्रेम रोगी...)

अरे कुछ नहीं है भाता, जब रंग ये चढ़ जाता,
मैं हूँ श्याम प्रेमी बस, श्याम को ही चाहूँ,
गाऊँ-गाऊँ-गाऊँ मैं तो, श्याम गुण गाऊँ ।। टेर ।।

खाटू नगरी जो भी जाता, इसका वो होकर रह जाता,
फिर खुद का कोई होश नहीं है, इसकी लौ में वो रम जाता,
सुनलो मेरी जुबानी, दुनिया हुई दिवानी ।। १ ।।

मतलब का है ये जग सारा, ये सच्चा परिवार हमारा,
अपनो ने जिसको दुत्कारा, उसका बन गया श्याम सहारा,
इससे जुड़ के बन जायेगा-२, घर सारा संसार तुम्हारा,
जहाँ जहाँ जाऊँ वहीं नाता नया पाऊँ,
गाऊँ-गाऊँ-गाऊँ मैं तो श्याम गुण गाऊँ ।। टेर ।।

श्याम पे चिन्ता छोड़ तू सारी, बदलेगी फिर सोच तुम्हारी,
"हर्ष" कहे बस खाटू आजा, आगे इसकी जिम्मेवारी,
जो श्याम का हो जाता, वो बैठा मौज उड़ाता ।। २ ।।

(तर्ज : पार करो मेरा बेड़ा...)

आई जनम की बेला रे देखो आई जनम की बेला,
लागा है गोकुल में मेला रे देखो आई जनम की बेला ।।

पावन कृष्ण जयन्ति आई, नन्द के घर में खुशियां छाई,
यशुमति के घर थाल बजे है, धरती अम्बर झूम रहे है,
जन्मा बिरज का छैला रे देखो आई जनम की... ।। १ ।।

श्याम दरश की अँखिया प्यासी, दर्शन को आये वृजवासी,
कान्हा की जयकार लगाये, मस्ती में नाचे और गाये,
उमड़ा है लोगों का रेला रे देखो, आई जनम की... ।। २ ।।

गऊओं का रखवाला आया, ग्वालों का गोपाला आया,
"हर्ष" राधिका का वो कन्हैया, गूजरियों का वंशी बजैया,
सुन्दर श्याम रंगीला रे देखो आई जनम की... ।। ३ ।।

(तर्ज : थोड़ा सा प्यार मिला है...)

आसरा एक तेरा, एक तेरा सहारा,
सुनले फरियाद मेरी-२, आ मुझे दे किनारा ।

जख्म जग ने दिये है, घाव किसको दिखाऊँ,
कोई अपना नहीं है, हाल किसको सुनाऊँ,
एक तुझपे ही बाबा-२, जोर चलता है मेरा ।। १ ।।

आँधिया चल रही है, रात भी है तूफानी,
बड़ा गहरा भवँर है, और कश्ति पुरानी,
आज मजबूर होके-२, मैने तुझको पुकारा ।। २ ।।

दर्द दिल मे भरा है, "हर्ष" तू बाँट लेना,
भेंट ये अवगुणों की, आज स्वीकार लेना,
मेट करके बुराई-२, तूने कितनों को तारा ।। ३ ।।

(तर्ज : अँखियो को रहने दे...)

अँसुओ से धोने दे, चरणों को श्याम आज,
अँखियो से गम की, कब से बहे धार ।। टेर ।।

जालिम जमाने ने, गम दिये कितने-२,
अब तो बिखर गये, सब मेरे सपने,
किस्मत के मारों को-२, मिलता है तेरा प्यार ।। १ ।।

लुट गई दुनियाँ में, दास की खुशियाँ-२,
मेरे लिए किस, काम की दुनिया,
सारी उमर अब तो-२, जपना है तेरा नाम ।। २ ।।

आँखे जो ये ना बहती, तू कहाँ मिलता-२,
मुझको कन्हैया का, दर कहाँ मिलता,
"हर्ष" दिवाने की-२, रखना जरा तू लाज ।। ३ ।।

(राग रचयिता : प्रवीन बेदी)९८३०४३२६६९

इंतजार है तुम्हारा इंतजार है,
साँवरे हमे तो तेरा इंतजार है ।। टेर ।।

भगतो ने मिलके, दरबार लगाया,
फूलों के गजरों, से तुझको सजाया,
क्या निखार है तुम्हारा क्या निखार है ।। १ ।।

केशरिया इत्तर, की खुशबु उड़े है,
मस्ती में भरके, दिवाने खड़े है,
जाँ निसार है हमारी जाँ निसार है ।। २ ।।

पावन ये नजारा, दिल को लुभाये,
देखे जो तुझको, वो होश भुलाये,
क्या सिंगार है तुम्हारा क्या सिंगार है ।। ३ ।।

"हर्ष" सता ना, हम सह ना पायें,
कबसे यूं बैठे, हैं पलकें बिछाये,
बेकरार है दिवाने बेकरार है ।। ४ ।।

(राग रचयिता - प्रवीण बेदी)९८३०४३२६६९

इस जीवन में कुछ पाना, तो बोलो जै बाबा की,
श्री श्याम की किरपा पाना-२,
तो बोलो जै बाबा की ।। टेर ।।

हारे का सहारा है ये, दुखियों का नाथ है,
जो भी पुकारे दिल से, उसके ये साथ है,
श्री श्याम का आशीष पाना, तो बोलो जै बाबा की ।। १ ।।

जिसने लगाई मेरे, बाबा की जैकार है,
उसके ही भर दिये, श्याम ने भण्डार है,
श्री श्याम से प्रीत बढ़ाना, तो बोलो जै बाबा की ।। २ ।।

"हर्ष" मेरे साँवरे की, महिमा अपार है,
कलयुग के देवता का, रूतबा अपार है,
श्री श्याम का दर्शन पाना, तो बोलो जै बाबा की ।। ३ ।।

(तर्ज : इतणो बड़ो मेरो भाग्य है...)

उत्सव मण्डयो है, श्याम धणी को थे तो,
बेगा बेगा आज्यो जी,
दरसण पाज्यो जी, ओ भगतो श्याम का-२ ।। टेर ।।

कुम कुम पत्री श्याम की, करल्यो थे स्वीकार जी,
श्याम धणी ने सेवकां को, भोत घणो इन्तजार जी,
उत्सव... ।। १ ।।

झाँकी लखदातार की, खूब सजेली आज जी,
बाबा के मीठे भजना की, करणी है बरसात जी,
उत्सव... ।। २ ।।

सोलह कला को साँवरो, तीन लोक को नाथ जी,
"हर्ष" थे सिर पर पाइज्यो, श्याम कृपा को हाथ जी,
उत्सव... ।। ३ ।।

(तर्ज : कन्हैया तुम्हे इक नजर...)

कन्हैया बड़ा बेखबर हो गया तू,
गमे दिल का हमको, असर दे गया तू ।। टेर।।

सम्भाला था बरसों से, दिल को जतन से,
चुराकर इधर से, उधर ले गया तू ।। १ ।।

अमन से जियेगें ये, सोचा था हमने,
उमर भर का दुखड़ा, मगर दे गया तू ।। २ ।।

तड़पना पड़ेगा यूँ, पहले ना जाना,
पखेरू के पंखो को, कतर ले गया तू ।। ३ ।।

दिवानों को उल्फत मे, मिला वो सिला है,
हमें "हर्ष" छलने का, हुनर दे गया तू ।। ४ ।।

(तर्ज : नगरी नगरी द्वारे द्वारे...)

कान्हा कान्हा दास पुकारे, आजा रे साँवरिया,
सेवक कबसे राह निहारे, ले ले रे खबरिया ।। टेर ।।

अपने हाथों से भगतों ने, "ये श्रृंगार सजाया है"-२,
अन्तर केशर की खुशबु से, "आँगन को महकाया है"-२,
लीले चढ़ कर आन पधारो, भगतों की दुअरिया ।। १ ।।

खीर चूरमा माखन मिसरी, "तुझको भोग लगायेगें"-२,
ऊँचे आसन आन विराजो, "सेवक चँवर ढुलायेगें"-२,
भाव भरे मीठे भजनों की, बरसेगी बदरिया ।। २ ।।

आने में अब देर करो ना, "बैठे हैं भरमाये से"-२,
सूख गये हैं "हर्ष" के आँसू, "नैन हुए पथराये से"२,
चरणों की धूली से पावन, करदे तू डगरिया ।। ३ ।।

(तर्ज : मैया तेरे प्यार में...)

खाटू वाले श्याम की, बाबा जी के नाम की,
दुनिया दिवानी हुई-२,
जग सारा ध्याये बाबा गुण तेरे गाये,
अब गूँजे है संसार में, जै जै कारा, श्याम तेरा जै कारा ।।

दुखड़े मिटाते, देखा इसे, किस्मत जगाते, देखा इसे,
भगतों के मन की, सुनता सदा, झोलियाँ भराते, देखा इसे,
जग सारा ध्याये... ।। १ ।।

भगतोंकोबाबा, भुलातानहींहै, खालीकिसीकोभी, लौटातानहींहै,
भगतों की बिगड़ी, बनाता सदा, अपनों को बाबा, रूलाता नहीं है,
जग सारा ध्याये... ।। २ ।।

हारे का साथी, कहाता है ये, "हर्ष" मेरी लाज भी, बचाता है ये,
भगतों का साथ ये, निभाता सदा, लीले पे चढ़के, आता है ये,
जग सारा ध्याये... ।। ३ ।।

(तर्ज : धीरे-धीरे बोल...)

खाटू वाला श्याम मेरे घर आया, घर आया मेरे घर आया,
मुझपे तरस ये खा गया-२ और मेरा मान बढ़ा गया ।। टेर ।।

सुनली मेरे बाबा ने फरियाद, रखली इसने आज भगत की लाज,
अरजी मेरी, इसने सुनी-२, सेवक का साथ निभा गया,
और दुनिया को दिखला गया ।। १।।

कैसे करूं मैं बाबा का सत्कार, निर्धन तो बस दे सकता है प्यार,
क्या दूँ भला, सोचूँ खड़ा-२, ये सच्ची प्रीत निभा गया,
और रूखा सूखा खा गया ।। २ ।।

दिल में मेरे श्याम की है तस्वीर, "हर्ष" जगी है आज मेरी तकदीर,
इसके भजन, गाऊँ सदा-२, मुझको भुलाया ना गया,
और लीले चढ़के आ गया ।। ३ ।।

(तर्ज : छुप छुप खड़े हो...)

खाटू वाले साँवरे का रूतबा अपार है,
लीले का सवार है ये लीले का सवार है ।। टेर ।।

कलयुग के देवता की महिमा निराली,
खाली नहीं लौटा कोई दर से सवाली,
बिना बोले भगतों की सुनता पुकार है ।। १ ।।

तीन बाण धारी है ये दुनिया में नाम है,
जिसका नही है कोई उसका ये श्याम है,
दुखड़े मिटाने को ये रहता तैयार है ।। २ ।।

"हर्ष" मेरे साँवरे का दूजा नही सानी,
दानियों में दानी है ये शीश का दानी,
इसके भरोसे छोड़ी मैने पतवार है ।। ३ ।।

(तर्ज : हम तुम्हे चाहते है ऐसे...)

खाटू वाले मैं तेरा दिवाना,
तेरे काबिल नहीं, पर जैसे भी हो तू निभाना ।। टेर ।।

मुश्किलों में तुझे ढूढंता हूँ,
बड़ा खुदगर्ज हूँ, मैं खुशी में तुझे भूलता हूँ ।। १ ।।

अवगुणों से भरा हूँ मैं बाबा,
मेरे अवगुण मिटा, दास आखिर मैं तेरा हूँ बाबा ।। २ ।।

तूने कितने ही अधमों को तारा,
पूछूं रो रो बता, तूने मुझको भला क्यूं बिसारा ।। ३ ।।

चाहे जैसा मुझे तू समझना,
"हर्ष" विनतियहीं, हाथ किरपा का यूँही तू रखना ।।४ ।।

(राग रचयिता : प्रवीन बेदी)९८३०४३२६६९

खीर चूरमा माखन मिश्री तुझे खिलायेगें,
आजा बाबा, तुझको छप्पन भोग जिमायेगें ।। टेर ।।

बड़े चाव से तेरे सेवक पलक बिछाये बैठे है,
भांत भांत के पकवानों के थाल सजाये बैठे है,
ऊँचे आसन बाबा तुझको आज बिठायेगें ।। १ ।।

चान्दी की झारी में पावन गंगा जल भरवाया है,
चन्दन केशर और केवड़ा उसमे आज घुलाया है,
बड़े प्रेम से बाबा तेरे चरण धुलायेगें ।। २ ।।

लाल गुलाबी रंग बिरगें फूल सजे हैं गजरों में,
श्याम सलोनी छवि बसी है आज हमारी नजरों में,
मन मोहन की प्यारी झाँकी आज सजायेगें ।। ३ ।।

जल्दी से तुम आन पधारो स्वागत की तैयारी है,
"हर्ष" तेरे भगतों की बाबा भीड़ यहाँ पर भारी है,
तेरा दर्शन पाके जीवन धन्य बनायेगें ।। ४ ।।

(तर्ज : मार दिया जाये...)

भगत - खीर बनवाई जाये, या चूरमा चढ़ाया जाये,
बोल मेरे श्याम तुझे क्या, भोग लगाया जाये ।।

तुझको फूलों से मोहन सजाऊँ,
तेरे बागे में इत्रर लगाऊँ,
चन्दन केशर घिसुं, तेरे मुख पे मलुं-२,
तेरे दरपे झुकुं मेरे सांवरिया ।।

श्याम प्रभु- मेरे भोले भगत क्या है तेरा,
जिसको अपना कहे सब है मेरा,
दे दे प्रेम जरा, थोड़ी भगती चढ़ा-२,
भाव मुझको खिला मेरे बावरिया,
तू क्या खिलायेगा और तू क्या चढ़ायेगा,
मेरी किरपा से तू बैठा मौज उड़ायेगा ।।

श्याम प्रभु - "हर्ष"" चाहता जो भोग लगाना,
किसी भटके को दरपे ले आना,
तरस खाता हूँ मैं, दर्द मिटाता हूँ मैं -२,
गर्व खाता हूँ मैं मेरे बावरिया, तू क्या खिलायेगा।।

(तर्ज : पिया याद रखोगे कि भूल जाओगे...)

गगरियों को फोड़े, गुजरियों को छेड़े, ये किसी को ना छोड़े,
फिर भी श्याम के बिना, सखी चैन आये ना ।। टेर ।।

पनघट हो या जमुना का तीर, "करता हमें कान्हा अधीर"-२,
राहों में, हमको सताये रे, गालों में ऊंगली गड़ाए रे,
मटकियों को तोड़े , ऊँगलिया मरोड़े, नैनो से नैना जोड़े,
फिर भी श्याम... ।। १ ।।

जुल्मी बड़ा है साँवरा, "माखन का चोर ये बावरा"-२,
ग्वालों के संग में ये आए रे, छींके से माखन चुराए रे,
कलईयों को मोड़े, मैं पकडु तो दौड़े, ये है बड़े निगोडे,
फिर भी श्याम... ।। २ ।।

बंशी ने क्या जादू किया, "हर्ष" हुआ वश में जिया"-२,
मुरली की तान सुनाये रे, सबको दिवाना बनाये रे,
मुरलिया जो छेड़े , करेजवा झिंझोड़े, हमे तंग करके छोड़े,
फिर भी श्याम... ।। ३ ।।

(तर्ज : जारे जा ओ हरजाई...)

छोटी सी कुटिया मेरी, आने में क्या है देरी,
दीनों के घर जाने की, कान्हा आदत है तेरी,
किरपा तू करदे भारी, मुझपे मेरे गिरधारी,
जन्मों से हूँ कान्हा, तेरा पुजारी ।। टेर ।।

मैने कुटिया आज बुहारी, बैठा देखुं राह तुम्हारी, नैन लगे हैं रोने,
ओ महलो में रहने वाले, हम है तेरे चाहने वाले, आजा श्याम सलोने,
मैं हूँ सेवक तेरा, तू है मालिक मेरा-२, ओ ऽऽऽ ,
सदियों से मैं हूँ तेरे दर का भिखारी ।। १ ।।

रूखा सूखा जो बन पाया, मैने मोहन आज बनाया,
आके भोग लगा जा, लोटा भर के छाछ चढ़ाले,
ठण्डे जल से प्यास बुझाले, ओ साँवलिये आ जा,
ये दोपहरी जले, ठण्डी छाँव तले-२, ओ ऽऽऽ,
कुटिया में मेरी आके लेटो मुरारी ।। २ ।।

झाड़ पोछं के खाट बिछाई, आजा प्यारे श्याम कन्हाई,
आके टेक लगाले, तुझको पंखी श्याम डुलाऊँ,
होले होले चरण दबाऊँ, थोड़ा सा सुस्ताले,
"हर्ष" अरजी करूँ, कबसे विनति करूँ-२, ओ ऽऽऽ,
सेवक को ना तरसाओ श्याम बिहारी ।। ३ ।।

(तर्ज : जब जब बहार आई...)

जब जब गमों ने घेरा, और कुछ नजर न आया,
मुझे तू याद आया, मुझे तू याद आया,
जब जब भी खाई ठोकर, और दिल ये मेरा रोया,
मुझे तू याद आया, मुझे तू याद आया ।। टेर ।।

अपना हो या बेगाना, सबने मुझे रूलाया-२,
तूने लबों को मेरे, आकर के है हसाँया,
ओऽऽऽ, जब जब तेरा दिवाना, दुखड़ों को सह न पाया,
मुझे तू याद आया... ।। १ ।।

तू प्यार का समन्दर, तुमसा नहीं है दूजा-२,
मैने तो तेरी कान्हा, हरदम करी है पूजा,
ओ ऽऽऽ, जब जब भी दिल में झाँका, तेरा ही अक्श पाया,
मुझे तू याद आया... ।। २ ।।

कश्ति का मेरा माझी, तुझको मैं मानता हूँ-२,
तेरे सिवा ना दूजी, चौखट ही जानता हूँ,
ओ ऽऽऽ, इस "हर्ष" को है समझा, दुनिया ने जब पराया,
मुझे तू याद आया... ।। ३ ।।

(तर्ज : देता हरदम साँवरे...)

जिसकी कोख में तू पला, खुशी उसे तू दे,
फिर तू मेरे श्याम से खुशियाँ झोली भर भर ले ।। टेर ।।

माँ का तेरे दिल में जो सत्कार ना होगा,
श्याम की किरपा का तू हकदार न होगा,
माँ के चरणों में जरा बन्दे तु झुक ले ।। १ ।।

सूखे में बेटा सुला गीले में खुद सोई,
लाल की पीड़ा में माँ की आँख है रोई,
कर्ज कभी उतरे नहीं हल्का कुछ कर ले।। २ ।।

सोच ले माँ का अगर तू दिल दुखायेगा,
जान ले प्यारे तू कैसे मोक्ष पायेगा,
भव से पार उतरने का रस्ता तु कर ले ।। ३ ।।

माँ की आज्ञा मान इसने शीश दे डाला,
"हर्ष" है ये साँवरा हारे का रखवाला,
श्याम धणी के जीवन से तू भी शिक्षा ले ।। ४ ।।

(तर्ज : चिरमी)

जोग लिख्यो है खाटू जाणे को-२,
भाया बेगो-बेगो खाटू चाल,
उडिके बाबो श्याम धणी ।।टेर।।

रंग अबीर सूं भरलै झोली,
कान्हुड़े संग खेलो होली,
भाया रंगणा है, भगतां रा गाल ।। १ ।।

ढ़ोलक ढफली चंग बजाओ,
मंदरिये में धूम मचाओ,
भाया खाटू माही, मची रे धमाल ।। २ ।।

फागणिये में श्याम बिहारी,
माल लुटासी मोकलो भारी,
भाया कर देसी, मालामाल ।। ३ ।।

"हर्ष" श्याम की ध्वजा चढ़ाजे,
म्हारे नाम की धोक लगाजे,
भाया जावेलो तू, सालूं साल ।। ४ ।।

(तर्ज : तेरे लिये माँ प्यारी प्यारी...)

झूला झूलो री राधे रानी, झुलाने तेरा श्याम आया रे-२,
श्याम आया, श्याम आया, श्याम आया रे ।। टेर ।।

सावन की बरसे है "रिमझिम बदरिया"-२,
तेरी चुनरिया भिगोने ओ राधा तेरा श्याम आया रे ।। १ ।।

रेशम की डोरी है, "चान्दी का झूला"-२,
झूले में तुझको बिठाने ओ राधा तेरा श्याम आया रे ।। २ ।।

कान्हा के हाथों में, "साजे मुरलिया"-२,
बंशी की तान सुनाने ओ राधा तेरा श्याम आया रे ।। ३ ।।

"हर्ष" बुलाये तेरा "प्रीतम ओ सजनी"-२,
मधुवन में रास रचाने ओ राधा तेरा श्याम आया रे ।। ४ ।।

(तर्ज : तुमको पिया दिल दिया इतने नाज से...)

तुमने जिया, हर लिया, छल से साँवरे, होऽऽऽ,
जोगन हो गई राधे रानी, नैना हुए बावरे, होऽऽऽ ।। टेर ।।

निन्दिया चुराई मेरी, तुमने पिया, होऽऽऽ,
दिल ये दिवान हुआ, तड़पे जिया, हाय तड़पे जिया,
ये क्या किया हाय तड़पे जिया,
हाय मैं लुट गई प्यार मे तेरे, लागा ऐसा घाव रे, होऽऽऽ ।।१ ।।

बाजी मुरलिया तेरी, रस की भरी, हो ऽऽऽ,
ऐसी रवानी मेरे, तन में भरी, हाय तन में भरी,
रस की भरी हाय तन में भरी,
बैरन पायल थिरकन लागी, बंशी की आवाज पे, होऽऽऽ ।।२ ।।

कैसा चढ़ाया कान्हा, मोपे नशा, हो ऽऽऽ,
भोली गुजरिया तेरी, यूं ना सता, हाय यूँ ना सता,
कैसा नशा हाय मोपे चढ़ा,
"हर्ष" दिवानी कहके अब तो, छेड़े मोहे गाँव रे, ऽऽऽ ।।३ ।।

(तर्ज : क्या बतायें तुम्हे इश्क में हम किस कदर...)

तूने गिरिवर को नख पे उठाया,बोझ कान्धो से मेरे उठाले ।।

पापियों में बड़ा हूँ मैं नामी, पाप हरने में तेरा न सानी,
कितने अधमों को तूने है तारा, पाप मेरे भी आकर मिटा दे ।।

ऐ विधाता तुम्ही पे नजर है, पार करने में कैसी कसर है,
जल पे पत्थर तिराये है तूने, पार मेरी भी नैया करादे ।।

बंदगी का असर हो रहा है, दिल इधर का उधर हो रहा है,
दिल चुरैया ना नजरें चुरा तू, हम गरीबों से आँखे मिला ले ।।

है अगर तुझको प्यारी गरीबी, हम भी चाहें तुम्हारी करीबी,
घर विदुर के अरे खाने वाले, रूखा सूखा हमारा भी खा ले ।।

बिक चुके हम गली में तुम्हारी, बेखबर "हर्ष" क्यूँ हो मुरारी,
हम हुकम को बजाने खड़े हैं, अब गुलामों में हमको मिलाले ।।

(तर्ज : तेरे नाम...)

तेरा नाम, जपते रहें हम, कन्हैया यूँ सातों जनम,
प्यार तेरा, पाते रहें हम, कन्हैया यूँ जनमो जनम ।। टेर ।।

होंठ खुले तो तेरा नाम निकलता है,
तेरे दर्शन को ये दिल मचलता है,
चौखट को ये मेरी आँखे तकती है,
कान्हा तेरे नाम की माला जपती है,
तेरा सदा-३ मानेगें अहसाँ, तू दर्शन दिखादे मोहन ।। १ ।।

दिल में तेरे नाम का झरना बहता है,
मेरी हर धड़कन में तूही रहता है,
तेरे सपनों में मैं खोया रहता हूँ,
तेरी किरपा से ही जीवन जीता हूँ,
तेरे बिना-३, बिल्कुल न होता, गुजारा हमारा मोहन ।। २ ।।

तेरे सेवक की बस एक तमन्ना है,
जीवन भर तेरे चरणों में रहना है,
"हर्ष" तुम्हारे गीत सदा मैं गाऊँगा,
चरणों की धूली से मैं तर जाऊँगा,
तेरे लिये-३ छोड़ी ये दुनिया, सहारा तू दे दे मोहन ।। ३ ।।

(तर्ज : तेरे चेहरे में वो जादू है...)

तेरी मुरली में वो जादू है, मदहोश बना देती है,
आये ना चैन मुझे कान्हा, "मेरे होश उड़ा लेती है"-२ ।।

तेरे तीखे तीखे नैना, लूटे मेरे मन का चैना,
तड़पु सारी सारी रैना तूने, मनवा मेरा लुभाया,
मेरे ओ बालम बैरी, जिया कर डाला चोरी,
जागुं यादों में तेरी मोपे, कैसा ये रोग लगाया,
बज उठती है जब तान मधुर "तो नींद चुरा लेती है"-२ ।। १ ।।

तेरी बाँसुरिया बाजे, मस्ती नस नस में जागे,
जम के गूजरिया नाचे कान्हा, हो गई मैं तो दिवानी,
ऐसी सुधबुध मैं हारी, तजदी लोक लाज सारी,
जाऊँ मुरली पे वारी तेरे, वश मे हुई राधे-रानी,
तू आता है हर ओर नजर "वो प्रीत जगा देती है"-२ ।। २ ।।

मेरे भोले जादूगर, मोपे जादू यूँ ना कर,
लचकुं नागिन सी सर-सर ऐसी, श्याम मगन हो नांचू,
बोले "हर्ष" तेरा कान्हा, कहता दिल का अफसाना,
छोड़ो ऐसे तरसाना मेरा, दिल पे नही है काबू,
जल उठता है मेरा श्याम जिया "ये आग लगा देती है" -२ ।। ३ ।।

(तर्ज : लागी छूटे ना अब तो सनम...)

तेरी राधा पे, करदे रहम,
काहे श्याम करेSSS, इतना सितम ।। टेर ।।

आजा दिवाने, तुझको पुकारे दिवानी ये तेरी,
तेरे बिना है, आज अधूरी कहानी ये मेरी,
रूठ गया क्या तू, रूठ गया, मेरे किशन ....।। १ ।।

रो-रो बुलाये, दिल ये बेचारा ना माने रे पिया,
तुम संग बाँधी, प्रीत की डोरी ओ मेरे छलिया,
प्यार किया है मैने, प्यार किया, तुमसे मोहन ... ।। २ ।।

अपना बनाके, काहे भुलाया बतादे रे जरा,
"हर्ष" तू आजा, मुरली की तान सुनादे रे जरा,
सूख गये है आँसू, सूख गये, तेरी कसम ... ।। ३ ।।

(तर्ज : हरियाणवी भजन)

तै बण्या दूज का चान्द बाबा नजर कदे ना लागे,
तने खड़्या निहारे जाट बाबा नजर कदे ना लागे ।। टेर ।।

मैं हरियाणे तै आया, तेरा रूप देख चकराया,
तेरी बाँकी टेडी चितवन, मेरा हिवड़ा भोत लुभाया,
तेरे घणे निराले ठाठ बाबा नजर कदे ना लागे ।। १ ।।

या मकराणे की कोठी , तेरी आख्याँ मोटी मोटी,
मुल्के सै होले होले, भगतां पर फेंके गोटी,
सोवे मोरछड़ी तेरे हाथ बाबा नजर कदे ना लागे ।। २ ।।

तने देख सलूणा मेरी, खिलगी रे पोरी पोरी,
इब जनम-जनम की बाबा, तेरे सै बंधगी डोरी,
तै भोत घणा खुर्राट बाबा नजर कदे ना लागे ।। ३ ।।

काला टीका लगवाले, मीरची-नींबू बंधवाले,
तै "हर्ष" सावँरा खुदने, निजरां तै आज बचाले,
तेरे रूतबे की के बात बाबा नजर कदे ना लागे ।। ४ ।।

(तर्ज : चिन्गारी कोई भड़के...)

दिवाना कोई तड़पे, तो श्याम ही गले लगाये,
दीनों की लाज जो जाये, उसे श्याम बचाये ।। टेर ।।

बाबा की बात निराली, निर्बल का साथ निभाये,
भगतों का है रखवाला, निर्धन का मान बढ़ाये,
दुनिया जिसको ठुकराये, ये उसको पास बुलाये,
दीनों की लाज... ।। १ ।।

दुखियों का साथी है ये, नहीं दूजा और कोई भी,
अरजी ये दीन दयालू, करता स्वीकार सभी की,
दुनिया जिसको तड़पाये, ये उसके कष्ट मिटाये,
दीनों की लाज... ।। २ ।।

ऐ "हर्ष" तू इसके आगे, अभिमान कभी ना करना,
इसका तू ध्यान लगाना, गुणगान इसी का करना,
दुनिया जिसको बिसराये, ये उसको मीत बनाये,
दीनों की लाज... ।। ३।।

गजल : (तर्ज : मुसाफिर है हम तो ...)

दिवाने हैं हम तो, जनमों से तेरे,
कन्हैया तुम्हे कुछ, खबर क्यूँ नहीं है,
नसीबों से हमको, मिला साथ तेरा,
दुआ का कहीं ये, असर तो नहीं है ।। टेर ।।

तुम्ही पे कन्हैया, भरोसा किया है-२,
तूही प्यार की हर खुशी बाँटता है-२,
तुझे जिसने पूजा है, वो जानता है,
बिना देखे उसका, बसर ही नहीं है ।। १।।

तेरी ही लगन है, तेरी ही तड़प है-२,
तेरी बंदगी का, ये कैसा सबब है-२,
बिना डोर के हम, खिंचे जा रहे हैं,
निभाने में कोई, कसर तो नहीं है ।। २ ।।

तेरा नाम ले करके, गज ने पुकारा-२,
उसे साँवरे तूने, पल में उबारा-२,
अपने भगत को, आकर बचाया,
नहीं कोई अपना, अगर तू नहीं है ।। ३ ।।

तेरी प्रीत कान्हा, मिलती रहे यूँ-२,
तेरी ज्योत दिल में, जलती रहे यूँ-२,
तेरी राह के हम, मुसाफिर हैं कान्हा,
नई "हर्ष" कोई डगर ये नहीं हैं ।। ४ ।।

(तर्जः दुख डाण्डे मै किसनु...)

दुख बाबा मैं, कितने सहुँ,
तू ना सुने तो बोलों, किससे कहुँ,
मेरे साँवरे ऽऽऽ, मेरे भी कन्हैया दुख टाल रे ।। टेर ।।

रूठ के नसीब मेरा, कहाँ सो गया,
बिना बोले चैन मेरा, कहाँ खो गया,
दुखड़े मिटाने मेरे, आजा साँवरे,
देखले तू आके मेरे घाव रे, मेरे साँवरे ऽऽऽ... ।। १ ।।

दिल में उमीदें लेके, आज आया हूँ,
कैसे बताऊँ कितने, दुख पाया हूँ,
पोछँ मेरे आके आसुँ, आजा साँवरे,
रो रो ये नैना हुए बावरे, मेरे साँवरे ऽऽऽ... ।। २ ।।

तेरे सिवा "हर्ष" तेरा, कहाँ जायेगा,
छोड़ना ना हाथ कान्हा, मर जायेगा,
छोड़ के तू काम सारे, आजा साँवरे,
डूबने न पाये मेरी नाव रे, मेरे साँवरे ऽऽऽ... ।। ३ ।।

(तर्ज : जिसको तेरा भरोसा जिसको तेरा सहारा...)

दुनिया ने जब रूलाया, तूने गले लगाया,
मुझे खाक से उठाकर, गोदी में ला बिठाया ।। टेर ।।

मैने जिनको प्यार बाँटा, उनसे मिली रूखाई,
नफरत मिली जहाँ से, तुझसे दुलार पाया ।। १ ।।

कभी मुझपे जाँ छिड़कते, मुखड़ा उन्हीने मोड़ा,
उनकी गली में सीना, मुझे तानकर चलाया ।। २ ।।

कैसे करूं अदा मैं, तेरा शुक्रिया बतादे,
ये जुबां जो कह न पाई, अश्कों ने कह सुनाया ।। ३ ।।

तेरे "हर्ष" ने कन्हैया, खेली है ऐसी बाजी,
मैं हार के जमाना, मेरा श्याम जीत लाया ।। ४ ।।

(हरियाणवी भजन)

(तर्ज : जित्ते नजर घुमाऊँ डमरू वाला...)

देख्या तेरा रूप साँवला, होग्या मैं तो घणा बावला-२,
थोड़ा सा तै गोरा थोड़ा काला दिखे सै,
सुपणे में भी मन्ने खाटू वाला दिखे सै ।। टेर ।।

खाटू हाला श्याम सलूणा, करग्या बैरी जादू टूणा,
जादूगर यो श्याम बड़ा ही आला दिखे सै ।। १ ।।

निजरां तै यो तीर चलावे, बैठ्या-बैठ्या हुकम सुणावे,
मकराणे का मंदिर बड़ा निराला दिखे सै ।। २ ।।

मोर छड़ी का झाड़ा देवे, भगतां के दुखड़े हर लेवे,
भगतां का यो भोत बड़ा रखवाला दिखे सै ।। ३ ।।

लेगा इसतै जो भी टक्कर, "हर्ष" बणेगा वो घनचक्कर,
कलयुग का यो देव बड़ा मतवाला दिखे सै ।। ४ ।।

(तर्ज : रंग बसन्ती...)

देव निराला, खाटूवाला, लीले चढ़कर आ गया,
भगतों में आनन्द छा गया ।
आँखे इसकी नीली-नीली, पहन पागड़ी पीली-पीली,
मोर पाँख की छटा रंगीली, देव निराला ।। टेर ।।

बाबा जी के चरण धुलाओ, ऊँचे आसन इन्हे बिठाओ,
जय जय बोलो ऽऽऽ, हारे का साथी ये प्यारा,
दीन दुःखी का है रखवारा,
भगतों का है श्याम सहारा, देव निराला... ।। १ ।।

गजरों से इन्हे आज सजाओ, अन्तर केशर से महकाओ,
जय जय बोलोऽऽऽ, खीर चूरमा इनको प्यारा,
छप्पन भोग लगाओ न्यारा,
घर में आया श्याम हमारा, देव निराला... ।। २ ।।

"हर्ष" कहे इन्हे आज रिझाओ, मीठे मीठे भजन सुनाओ,
जय जय बोलो ऽऽऽ, चमका है तकदीर का तारा,
रखा इसने मान हमारा,
खाटू वाला आन पधारा, देव निराला... ।। ३ ।।

(तर्ज : बस इतनी तमन्ना है...)

दो पंख दिये होते, उड़ आता तेरे दरबार,
ऐ मेरे लखदातार ।। टेर ।।

तेरी ज्योत से मिट जाता, अंधियारा मेरा दाता-२,
ये दास भी जी भरके, कर लेता तेरा दीदार,
ऐ मेरे लखदातार ।। १ ।।

कुछ दिल की मैं कहता, कुछ तेरी सुन लेता-२,
तेरे चरणों मे झुक कर, लेता मैं जन्म सुधार,
ऐ मेरे लखदातार ।। २ ।।

मैं तेरा दिया खाऊँ, तेरा साथ सदा चाहूँ-२,
तेरी किरपा से बाबा, चलता है मेरा संसार,
ऐ मेरे लखदातार ।। ३ ।।

आँखे ये मेरी बरसे, तेरे दर्शन को तरसे-२,
इस "हर्ष" पे भी करदे, थोड़ी सी दया सरकार,
ऐ मेरे लखदातार ।। ४ ।।

(तर्ज : तू प्यार है किसी और का...)

धोखे मिले ऐतबार में, ओ साँवरे मुझे प्यार दे-२,
मैं तो घिर गया मझधार में-२, मेरी नाव को तू तार दे ।।

इस जमाने ने, तड़पाया है-२,
आँख फेरी है, बिसराया है-२,
मेरे अपनों ने, ठुकराया है-२,
मैं सिसक रहा हूँ साँवरे, जरा आके आँसू थाम ले ।। १ ।।

श्याम रोते को, तू हँसाता है-२,
राह भूले को, तू दिखाता है-२,
जो भी चाहता है, तू निभाता है-२,
ये उजड़ गया गुलशन मेरा, जरा आके तू सँवार दे ।। २ ।।

"हर्ष" ने दिल पे, चोट खाई है-२,
तेरी भक्ति यहाँ, खेंच लाई है-२,
तेरे बेटे की, ये दुहाई है-२,
मै तो झुक गया तेरे द्वार पे, चाहे थामले या बिसार दे ।। ३ ।।

(तर्ज : मेरी छम छम बाजे पायलिया...)

नाचे, छम छम देखो गूजरिया-२,
श्याम बजी रे तेरी, बांसुरिया ।। टेर ।।

तेरी मुरली की धुन पे हुई बावरी,
होश बिसराई सिर से गिरी गागरी,
ऐसी लागी लगन, नाची होके मगन,
देखो, सिर से सरक गई चूनरिया ।। १ ।।

तेरी बंशी में ऐसा क्या जादू भरा,
चैन छीना कलेजे से इसने मेरा,
जीना मुश्किल किया, तूने मेरे पिया,
मेरे, जियरा मे चमके है बिजुरिया ।। २ ।।

तूने रग रग में ऐसी रवानी भरी,
बनके कठपुतली नाचे दिवानी तेरी,
"हर्ष" जादू किया, मुरली ने पिया,
तेरे, नाम की हुई रे मैं तो बावरिया ।। ३ ।।

(तर्ज : होलिया मे उड़े रे...)

नाचेगें आज सारी रात, धिनक धिन ता थैया,
झुमेगें बाबा जी के साथ, धिनक धिन ता थैया ।। टेर ।।

ढ़ोल नगाड़े ढ़म ढ़म बाजे, सेवक सारे छम छम नाचे,
ठुमका लगाये सारे आज, धिनक धिन ता थैया ।। १ ।।

श्याम धणी का उत्सव आया, भगतों ने बाबा को रिझाया,
भजनों की हुई बरसात, धिनक धिन ता थैया ।। २ ।।

खाटू से श्री श्याम पधारे, भगतों के हुए वारे न्यारे,
झूमे है सारी कायनात, धिनक धिन ता थैया ।। ३ ।।

"हर्ष" नजारा है बड़ा प्यारा, चमक उठा तकदीर का तारा,
बाबा से हुई मुलाकात, धिनक धिन ता थैया ।। ४ ।।

(तर्ज : समझौता गमों से करलो...)

नाता तुम श्याम से जोड़ो-२,
मुश्किलों को, पलमें हर लेगा, ओ SSS..
चिन्ता तुम, श्याम पे छोड़ो-२,
जिन्दगी को, सुखमय कर देगा ।। ओSSS.. ।। टेर ।।

सोच रहा क्या, ओ दिवाने,
श्याम की महिमा, तू क्या जाने,
लाखों की किस्मत को, सेठ श्याम ने बदला ।। १ ।।

श्याम को ध्याले, ओ मतवाले,
जीवन अपना, चमन बनाले,
लाखों की बगिया को, सेठ श्याम ने सीचाँ ।। २ ।।

श्याम हवाले, करदे नैया,
"हर्ष" बनेगा, तेरा खिवैया,
लाखों की कश्ति को, सेठ श्याम ने तारा ।। ३ ।।

(तर्ज : नैनो में बदरा छाये...)

नैनों को कुछ ना भाये, मछली सी तड़पुं हाय,
कैसी ओ किशन तूने, बंसरी बजाई ।। टेर ।।

श्याम सलोने आ जा, प्रीत निभाने आ जा,
जनमों जनम की मेरी, प्यास बुझाने आ जा,
बोले ये दिवानी तोसे, कर ले सुनाई ।। १ ।।

बावरी बनाई तूने, बंसरी बजाई तूने,
राधा दिवानी तड़पे, नीन्दे चुराई तूने,
मैने ओ बलम सारी, सुध ही भुलाई ।। २ ।।

रातें कटे ना रोते, जगती हूँ सोते सोते,
"हर्ष" चला ना जाये, विरहा को ढ़ोते ढ़ोते,
तोसे क्यूं सजन बैरी, अंखिया लड़ाई ।। ३ ।।

(तर्ज : मिल जायेगा किनारा...)

पहली दफा लौटाया मैं मान जाऊगाँ,
अगली दफा जो आया तो लेकर जाऊगाँ ।। टेर ।।

माना कड़ा थोड़ा मेरा तकादा है,
देने में देरी क्यूं कहो क्या इरादा है,
कोई अड़चन हो तो कहदे मैं लौट जाऊगाँ,
अगली दफा... ।। १ ।।

इन्कार सुनने की आदत नही मुझको,
साहुकार दुनियां में कहते सभी तुझको,
तेरी मजबूरी हो इबकी मैं मान जाऊगाँ,
अगली दफा... ।। २ ।।

वादा तेरा सच्चा मुझको यकीं तुझपे,
कहे "हर्ष" ना होना नाराज तू मुझसे,
गर तुमसे तकादा छोडुं तो क्या मैं खाऊगाँ,
अगली दफा... ।। ३ ।।

(राग रचयिता : प्रवीन बेदी)९८३०४३२६६९

फागण आयो, मन हर्षायो, रलमिल हालो रे ऽऽऽ
बेगा बेगा चालो रे ऽऽऽ-२ ।। टेर ।।

हेलो आयो, श्याम बुलायो, खाटू चालो रे ऽऽऽ,
बेगा बेगा चालो रे ऽऽऽ-२, ।। १ ।।

रंग उड़ाओ, चंग बजाओ, घूमर घालो रे ऽऽऽ,
बेगा बेगा चालो रे ऽऽऽ-२, ।। २ ।।

खाटू जाओ, निशान उठाओ, शिखर चढ़ाल्यो रे ऽऽऽ,
बेगा बेगा चालो रे ऽऽऽ-२, ।। ३ ।।

झूमो गाओ, मौज मनाओ, महिमा गाल्यो रे ऽऽऽ,
बेगा बेगा चालो रे ऽऽऽ-२, ।। ४ ।।

"हर्ष" थे आओ, श्याम रिझाओ, किरपा पाल्यो रे ऽऽऽ,
बेगा बेगा चालो रे ऽऽऽ-२, ।। ५ ।।

(तर्ज : फूलों के रंग से...)

फूलों में तूही, कलियों में तूही, गुलशन में तूही समाया,
लाखों दिलों की धड़कन को रोका, होले से जब मुस्कुराया,
तेरे ही दम पे दुनिया ये चलती, तुमसे ही रौशन सितारे,
तेरे इशारे पे आती खिजायें, तेरे ही दम पे बहारे,
हाँ, बादल बिजली रिमझिम सावन ये बून्दों की धार,
लीले वाले नमन तुझे कई-कई बार,
कितना पावन कितना पावन बाबा तेरा द्वार,
खाटू वाले नमन तुझे कई-कई बार ।। टेर ।।

तूही बनाता, तूही बिगाड़े, बगिया का तूही है माली,
तूही हँसाता, तूही रूलाये, महिमा है तेरी निराली,
तूने बनाया, तूने रचाया, तूने ये जीवन सजाया,
तेरा दिया है, तू ही सम्भाले, तेरी ही सारी ये माया,
हाँ बादल... ।। १ ।।

काशी में तूही, मथुरा में तूही, तेरा अवध में बसेरा,
देखूँ जिधर भी, पाऊँ तुझे ही, कण-कण में है नाम तेरा,
मीरा का मोहन, राधा का कान्हा, नरसी का तूही साँवरिया,
बंशी की धुन की, कबसे है प्यासी, गोकुल की सारी गुजरियां,
हाँ बादल... ।। २ ।।

तेरी अदायें, दिल को लुभाये, होले से यूँ मुस्कुराना,
सुन्दर सलोनी, चितवन तुम्हारी, हमको बनाती दिवाना,
जितना भी चाहें, दिल से भुलाना, लेकिन नहीं भूल पाते,
तेरे विरह में, "हर्ष" कन्हैया , रह रहके आँसू बहाते,
हाँ बादल... ।। ३ ।।

(तर्ज : तुम्ही मेरे मंदिर...)

बता मेरे मोहन, बतादे मुरारी, भला आज क्या है, मरजी तुम्हारी ।।

सुदामा के मन की, पीड़ा समझ ली,
गमे दिल तू मेरा, समझता नहीं क्यूँ,
करमा का खीचड़, अरे खाने वाले,
मेरी भी गली से तू, गुजरता नही क्युँ,
भगतों के दिल की, खबर लेने वाले,
बता मेरी सुध क्यूँ, तूने बिसारी ।। १ ।।

गरीबों के दाता से, भला क्यूँ मैं मागुँ,
बिना माँगे देने में, मशहूर है तू,
तेरे दरपे खाली, पड़ी झोली मेरी,
बतादे क्यूँ इतना, मजबूर है तू,
नजरें दया की, जरा मुझपे डालो,
बड़ी आशा लेकर, खड़ा ये भिखारी ।। २ ।।

फकीरों का क्या है, मिला ना मिला तो,
मगर सोचले क्या, जमाना कहेगा,
दयारूपी सिन्धु में, गोता लगाकर,
तेरा "हर्ष" प्यासा, क्यूँ कर रहेगा,
तू ही मेरा ठाकुर, तू ही मेरा मालिक,
जन्मो जनम का मैं, तेरा पुजारी ।। ३ ।।

(तर्ज : भरबा दे मदन गोपाल...)

बाजण दे रे नन्द जी का लाल, मुरली बाजण दे,
नन्दरानी का बाल गोपाल, मुरली बाजण दे ।। टेर ।।

तान सुणी तो झट आई मैं दौड़ती-२,
रोतों छोड़ आई घरां मै तो लाल ।। १ ।।

छलक गई रे मेरी पाणी भरी मटकी-२,
मैं तो भुली जग जंजाल ।। २ ।।

भूल गई रे कान्हा दही मैं बिलोणो-२,
मेरो हो गयो हाल बे हाल ।। ३ ।।

रंग चढ़्यो रे कान्हा मेरे तो मोकलो-२,
इब नाचूं मैं नौ नौ ताल ।। ४ ।।

"हर्ष" कान्हुड़ा मैं तो होगी रे बावली-२,
बैरी हिवड़ो लियो तू निकाल ।। ५।।

(तर्ज : बार-बार तोहे क्या...)

बिलख रहे गोकुल के वासी रो रो करे पुकार,
तेरे बिना मोहन जीना हुआ दुश्वार ।।

कुँज गलिन में आज उदासी छाई है,
आज कदम की डाली भी मुरझाई है,
बिन तेरे ऐ श्याम सजे ना, गोकुल का श्रृंगार ।। १ ।।

जमना की लहरें लहराना भूल गई,
राधा भी पायल छनकाना भूल गई,
बंशी के बिन सूनी हो गई, पायल की झनकार ।। २ ।।

आज बिरज की माटी तुझे बुलाती है,
रह रह करके याद तेरी तड़पाती है,
श्याम विरह में राधा की, आँखों से बरसे धार ।। ३ ।।

मधुवन में तुम रास रचाने आ जाओ,
इन नैनों की प्यास बुझाने आ जाओ,
"हर्ष" तुम्हारे मीत पुकारे, आ जाओ इक बार ।। ४ ।।

(तर्ज : सैंया ले गई जिया...)

बैयाँ छोड़ो रे जरा मेरे साँवले किशन,
ऐसे छूआ तूने काँपे मेरा गोरा बदन ।। टेर ।।

दहिया, जो बेचन मैं निकली, पकड़ी, बता काहे उंगली,
ज्यूँही, चुनर सिर से फिसली, हो गई, शरम से मैं पगली,
काहे मेरा रस्ता रोके, जुल्मी सजन ।। १ ।।

जुल्मी, बड़ा है सांवरिया, देखी, अकेली गूजरिया,
चुपके, यूँ मारी काँकरिया, फोड़ी, क्यूं मेरी गागरिया,
रोज रोज काहे करे, हमपे सितम ।। २ ।।

भोली, बिरज की छोरी रे, अच्छी, नहीं बरजोरी रे,
कान्हा, दया कर थोड़ी रे, छोड़ो, ये जोराजोरी रे,
"हर्ष" गुजरियो पे तू, करदे रहम ।। ३ ।।

(राग रचयिता : प्रवीन बेदी)९८३०४३२६६९

भगत तुम जइयो रे, जइयो रे, फागुन में इक बार,
बुलावा आयेगा, आयेगा, खाटू से हर बार,
ये मोर छड़ी ले हाथों में, तेरी किस्मत खोलेगा,
तू श्याम धणी की जय जय, जीवन भर बोलेगा ।। टेर।।

खाटू में जाकर के देखो श्याम कचहरी लगती है,
बनके हाकिम न्याय चुकाता सबकी किस्मत खुलती है,
ये धर्म तराजू पे भगतों की भगती तोलेगा ।। १ ।।

पिछले सारे पाप तुम्हारे ग्यारस के दिन धुल जाये,
बंद पड़े तकदीर के ताले बारस के दिन खुल जाये,
ये जहर हटा जीवन में तेरे अमृत घोलेगा ।। २ ।।

"हर्ष" कहे फागुन में प्यारे इतना काम तू कर लेना,
एक निशान उठा हाथों में ध्यान श्याम का धर लेना,
गर महर श्याम की मिल जाये मस्ती में डोलेगा ।। ३ ।।

(राग रचयिता : प्रवीन बेदी)९८३०४३२६६९

भगतों की कुटिया में बाजे, श्याम नाम का इकतारा,
गूजँ रहा होगा सरगम से, खाटू वाले महल तेरा ।। टेर ।।

इकतारे के तार पुकारे, श्याम सलोने आ जाओ,
मन मंदिर में ओ साँवलिये, अब तो आके बस जाओ-२,
पल दो पल ही कुटिया मे तू, करले कान्हा अब डेरा ।। १ ।।

ऐसी लगन लगी है प्यारे, साँस साँस तेरा नाम जपे,
नैनों में इक तूही समाया, हर पल तेरा ध्यान धरे-२,
चरण तुम्हारे पड़ जाये तो, होगा जीवन सफल मेरा ।। २ ।।

मगन हुऐ हैं श्याम दिवाने, श्याम नाम की मस्ती में,
दीन दयालू आ भी जाओ, हम दीनों की बस्ती में-२,
"हर्ष" हमारा कट जायेगा जनम जनम का ये फेरा ।। ३ ।।

(तर्ज : और इस दिल में क्या रखा है...)

भूखे के मुख में, देता निवाला,
दीनों का तूही, बना रखवाला ।। टेर ।।

तेरी दिवानगी में बेखबर जो हुआ है,
उसी दिवाने की तू खबर खुद ले रहा है,
मैं भी अपनी सुध बिसरा के "दर तेरे आया"-२,
भक्त जनों को, थामने वाले, गिरते हुए को, तूने सम्भाला ।। १ ।।

भरे भण्डार तूने, लुटा जो तेरी खातिर,
दुखों को मेट डाला, मिटा जो तेरी खातिर,
प्यार में तेरे खुद को लुटा के "दर तेरे आया"-२,
सेवक का दिल, लूटने वाले, तेरा जग में, नियम निराला ।। २ ।।

पता ऐ श्याम तेरा, पतित जो पूछता है,
उन्ही दीनों को दाता, सदा तू ढूढ़ता है,
भक्त तुम्हारा पता लगाके "दर तेरे आया"-२,
नाम की तेरे, बाँसुरी वाले, "हर्ष" हमेशा, फेरू मैं माला ।। ३ ।।

(तर्ज : अपने आँचल की...)

ममता की शीतल छाया में जब भी मुझे सुलाओ माँ,
तुम लोरी की जगह श्याम के किस्से मुझे सुनाओ माँ,
श्याम देव की बोल के जै जै मुझको रोज जगाओ माँ ।। टेर ।।

बर्बरीक ने कैसे अपनी माँ का वचन निभाया था,
शीश दान दे श्री कृष्ण को श्याम नाम वो पाया था,
सिर पे मेरे हाथ फिरा के, ये बाते समझाओं माँ, तुम ... ।।

थाम के मेरी उँगली माता सत की राह दिखाना तू,
श्याम देव के भजनों में माँ मुझको भी ले जाना तू,
बेटे की जिद के आगे तुम, कभी कभी झुक जाओ माँ, तुम ... ।।

एक बार दिखलादे मुझको श्याम की नगरी जाऊँगा,
शीश के दानी महाबलवानी श्याम का दर्शन पाऊँगा,
श्याम कुण्ड के पावन जल से, मुझको भी नहलाओ माँ, तुम ... ।।

हर ग्यारस को अपने घर में श्याम की जोत जगा लेना,
बारस के दिन खीर चूरमा श्याम के भोग लगा लेना,
"हर्ष" ज्योत के आगे मेरा माथा तुम टिकवाओ माँ, तुम ... ।।

(तर्ज : सब कोई मिलाके पीते है...)

मालिक की अपने दास पे इतनी दया हुई-२,
दिल का वो दर्द दे दिया-२, जिसकी दवा नहीं ।। टेर ।।

मिलने की चाह में उसे पागल सा हो गया-२,
जलने में जो मजा मिले-२, मिलने मे वो नहीं ।। १ ।।

मंदिर में ढूंढा है उसे दुनिया भी छान ली-२,
अपने जिगर में झाँक के -२, देखा कभी नहीं ।। २ ।।

तर जाते जिसके जोर पे ऐसे करम कहाँ-२,
वरना सहारा हम तेरा-२, लेते कभी नहीं ।। ३ ।।

दम पे तुम्हारे "हर्ष" ये दुखड़ो से लड़ गया-२,
जग को दिखाने घाव हम-२, जायेगें अब नहीं ।। ४ ।।

(तर्ज : इतना तो याद है मुझे...)

मिलने ओ श्याम साँवरे, ये जिया बेकरार हुआ,
तीर जुदाई का तेरा, सीने के मेरे पार हुआ ।। टेर ।।

तेरी अदायें, मेरा मनवा लुभाये, होश मेरे उड़ाये तूने साँवरे,
खुद को भुलाऊँ, सुध सारी बिसराऊँ,
ऐसे तुझमे खो जाऊँ मेरे साँवरे,
फिर भी न जाने क्या हुआ, बेगाना मेरा यार हुआ ।। १ ।।

बंशी बजाना, तेरा रास रचाना, काहे मुझको सताना तूने छोड़ा,
जिया चुराके, मोसे नेहा लगाके, मोहे अपना बनाके मुख मोड़ा,
ओ रे निगोड़े रसिया, जीते जी मोहे मार गया ।। २ ।।

राधा बुलाये, तेरी यादें रूलाये, तोसे दूरी सही ना जाये कान्हा,
"हर्ष" तू आके, जरा मुखड़ा दिखादे, अब ये दूरी मिटादे मेरे कान्हा,
प्रीत ने छलनी किया, मेरा तो कई बार जिया ।। ३ ।।

(तर्ज : गीत तेरे साज का...)

मीत तूही साँवरे, तूही पालन हार है,
दुःख में मेरा साथी तूही, सुख का तू भण्डार है ।। टेर ।।

मेरे पल में मेटता है, साँवरिया तू गम-२,
आसां करता कठिनाई को, श्याम तूही हर दम ,
ये मेरे जीवन की बगिया, तुमसे ही गुलजार है ।। १ ।।

दीनों का नाथ तूही है, हारे हुए के है साथ-२,
सिर पे मेरे बना रहे यूँ, श्याम तेरा ये हाथ,
तुझसे ही ऐ मोहन चलता, ये मेरा संसार है ।। २ ।।

तू श्याम सदा रखता है, "हर्ष" भगत का मान-२,
तेरा सेवक तुझसे पाये, तेरी दया का दान,
तू मेरी नैया का माझी, बस तूही पतवार है ।। ३ ।।

(राग रचयिता : प्रवीन बेदी)९८३०४३२६६९

मीत बनो तुम मेरे कन्हैया, मेरे बनो तुम साथी ।। टेर ।।

हार गया हूँ लिख लिख तुमको, प्रेम भरी मैं पाती,
प्रेम भरी मैं पाती कन्हैया, प्रेम भरी मैं पाती ।। १ ।।

ज्युँ तड़पे है जल बिन मछली, मैं तड़पुं दिन-राती,
मैं तड़पुं दिनराती कन्हैया, मैं तड़पुं दिन राती ।। २ ।।

दिल का कोना तुम बिन सूना, ज्युँ दीपक बिन बाती,
ज्युँ दीपक बिन बाती कन्हैया, ज्युँ दीपक बिन बाती ।। ३ ।।

"हर्ष" कहे रे याद मे तेरी, आँखे भर भर आती,
आँखे भर भर आती कन्हैया, आँखे भर भर आती ।। ४ ।।

(तर्ज : दो दिल टूटे दो दिल हारे...)

मीठी-मीठी, तान सुना रे-२,
मुरली वाले, मुरली बजा रे ।। टेर ।।

सूना है मन का कोना, सूनी पड़ी है मेरी साँस रे,
बिन तेरे श्याम सलोने, कोन रचाये आके रास रे,
राधा दिवानी तुझको, रो रो पुकारे ।। १ ।।

किसको दिखाऊँ जाके, दिल पे लगे ये मेरे घाव रे,
थिरकेगें कैसे बोलो, मुरली बिना ये मेरे पाँव रे,
होठों से अब तो कान्हा, बंशी लगा रे ।। २ ।।

सहमा है पत्ता पत्ता, ठहरी है जमुना की धार रे,
विरहा में जलते जलते, राधा हुई है जार जार रे,
"हर्ष" लगी जो दिल में, आग बुझा रे ।। ३ ।।

(तर्ज : वो दिल कहाँ से लाऊँ...)

मेरा कसूर क्या है, इतना जरा बतादे,
बेटा हूँ मैं तुम्हारा, बेटे को ना सजा दे ।। टेर ।।

मैं दूर होके तुझसे रहने कभी ना पाऊँ,
जी चाहता है इस पल दरबार तेरे आऊँ,
नाकामियो का ऐसा, मुझको न तू सिला दे ।। १ ।।

इस दिल ने तुमको चाहा क्या ये कसूर मेरा,
तेरे लिये है तड़पा और रोया दिल ये मेरा,
ये मोम का बना है, पत्थर इसे बनादे ।। २ ।।

माना है कितनी कमियाँ, मुझमे ऐ मेरे दाता,
बच्चा समझ के उनको तू भूल क्यूं न जाता,
इस "हर्ष" की तू दिल से, भूलें सभी भुला दे ।। ३ ।।

(तर्ज : मेरा पढ़ने में नहीं लागे...)

मेरा साँवरिये ने ले लिया दिल, ओऽऽऽ-२,
ये कैसी हो गई मुश्किल, ओऽऽऽ,
अरे रात को नीन्दों में वो आये,
और दिन को जिया तड़पाये, कोई,
मुझको सम्भालो, "मुझे नेह श्याम से हो गया"-२ ।। टेर ।।

ओऽऽऽ बैठी सोचूं श्याम न आये-२,
आज न जाने क्यूँ जियरा जलाये-२,
पास न जाऊँ डरती हूँ मैं -२,
दूर से बातें करती हूँ, कोई मुझको सम्भालो, मुझे नेह ... ।।

ओ ऽऽऽ दिल की बातें कह नहीं पाऊँ-२,
बिन कहे भी उसे रहने ना पाऊँ-२,
लिखना चाहूँ लिख न सकूँ मैं -२,
दिल पे काबू रख न सकूँ, कोई मुझको सम्भालो, मुझे नेह ... ।।

ओ ऽऽऽ साँवरिया क्यूँ पढ़ नहीं पाता-२,
"हर्ष" कहे रे मेरे नैनो की भाषा-२,
प्यार में उसके आन पड़ी मैं-२,
दुनिया से अनजान हुई, कोई मुझको सम्भालो, मुझे नेह ... ।।

(राग रचयिता : प्रवीन बेदी)९८३०४३२६६९

मेरे बाबा ने बान्धी कमाल पगड़ी,
थोड़ी केशरिया थोड़ी सी लाल पगड़ी,
लाल पगड़ी, कमाल पगड़ी ।। टेर ।।

पचरंगी बाबा की पगड़ी रंगाई,
सूरज की किरणे हैं इसमें समाई,
तेरे भगतों पे फेंके है जाल पगड़ी,
थोड़ी... ।। १ ।।

मोर पँख तेरी पगड़ी में सोहे,
जिसपे किलंगी मन सबका मोहे,
कहीं करदे ना जादू सम्भाल पगड़ी,
थोड़ी... ।। २ ।।

पगड़ी से पल भर भी आँखे हटे ना,
"हर्ष" किसी की बैरी नजर लगे ना,
आज हमको भी करदे निहाल पगड़ी,
थोड़ी... ।। ३ ।।

(राग रचयिता : प्रवीन बेदी)

मेरे सिर पे सदा तेरा हाथ रहे,
मेरा साँवरा हमेशा मेरे साथ रहे ।। टेर ।।

मैं तो जनमों से तेरा दिवाना हूँ,
तेरी किरपा से मैं अनजाना हूँ,
मेरी झोली में ये तेरी सौगात रहे ।। १ ।।

तेरी किरपा जो मुझपे हो जायेगी,
मेरी करनी को बाबा धो जायेगी,
तेरे छोटे से दिवाने की बात रहे ।। २ ।।

मेरी मुश्किल का हल हो जायेगा,
मेरा जीवन सफल हो जायेगा,
"हर्ष" अपनी यूँ होती मुलाकात रहे ।। ३ ।।

(तर्ज : सोणा मेरा यार सोणा वे...)

मेरे मोहना, मेरे साँवरे, ओरे छलिये,
सोणा मेरा श्याम सोणा रे, साँवरे का नाम सोणा रे,
मेरे मोहना, मेरे साँवरे, हो गये रे, हम बावरे ।। टेर ।।

श्याम तेरी अजीब आदत है,सारे दीनों का तू पालक है,
झोलियां सबकी तू भरता है,तू सुने दास की शिकायत है,
तेरा रूतबा कन्हैया न्यारा है, तेरा जलवा बड़ा ही प्यारा है,
तेरा डंका बजे जमाने में, हम दिवानों का तू दुलारा है,
सावराँऽऽऽ, सावराँऽऽऽ, सावराँऽऽऽ,
सोणा मेरा यार.. ।। १ ।।

जिसको रूसवा किया जमाने ने, शरण तेरी ली उसी दिवाने ने,
गले से तूने उसे लगाया है, कमी ना छोड़ी प्रीत निभाने में,
तेरे दरबार का क्या कहना है, मेरे सरकार का क्या कहना है,
"हर्ष" इतनी तमन्ना बाकी है, तेरे चरणों में हमको रहना है,
सावराँऽऽऽ, सावराँऽऽऽ, सावराँऽऽऽ,
सोणा मेरा यार.. ।। २ ।।

(तर्ज : इन्कार नहीं करना...)

मेरे श्याम दया करना, मेरी लाज सदा रखना,
गिरने लगुं जब भी, मुझे तू थाम लिया करना ।। टेर ।।

चल पड़ा हूँ राह में, लेके नाम मैं तेरा,
मुझे तू संभालना, मुश्किलों में जो पड़ा,
राहें आसां मेरी करना, ना रूआसाँ मुझे करना ।। १ ।।

ठुकराया जिन्दगी ने, कुछ नहीं था मेरा,
कैसे भूल पाऊगां, अहसान मैं तेरा,
दर्दे दिल की दवा करना, ना मुझे रूसवा करना ।। २ ।।

तूही माता तूही पिता, तूही परिवार है,
"हर्ष" तूही साँवरे, मेरा घरबार है,
मेरा मान सदा रखना, सिरपे हाथ सदा धरना ।। ३ ।।

(तर्ज : कभी आर कभी पार...)

मेरे श्याम तेरा नाम जपुं आठो पहर,
कान्हा लेले रे जरा तू आके मेरी खबर ।। टेर ।।

दिल ये दिवाना मेरा तेरे दरपे खो गया,
तोड़के बंधन सारे मैं तो तेरा हो गया,
दिल को तूही लागे प्यारा, साथी बन गया श्याम हमारा,
दूजा तुमसा कहाँ... ।। १ ।।

अपने दिवाने से तू मुख नहीं मोड़ना,
जग सारा चाहे छूटे पर तू ना छोड़ना,
तेरी यूँही किरपा पाऊँ, मैं तो बस इतना ही चाहूँ,
रूठे चाहे जहाँ... ।। २ ।।

चरणों में तेरे बीते "हर्ष" की ये जिन्दगी,
करता रहूँ मैं कान्हा बस तेरी बंदगी,
यूँही मेरा साथ निभाना, दिल से मुझको नहीं भुलाना,
देना मुझको पनाह... ।। ३ ।।

(तर्ज : मुझे तेरी मुहब्बत का...)

मुझे तेरा अगर कान्हा, सहारा ना मिला होता,
भटकती नाव तूफ़ाँ में, किनारा ना मिला होता ।। टेर ।।

पुकारा लाख अपनों को, किसी ने मुड़ के ना देखा,
बदल दी साँवरे तूने, मेरी बिगड़ी हुई रेखा,
तेरी रहमत जो ना होती, गुजारा ना चला होता ।। १ ।।

बरसती आँख को पोछां, मुझे हँसना सिखाया है,
मेरी मुरझाई बगिया को, करीने से सजाया है,
बिना तेरे चमन मेरा, दुबारा ना खिला होता ।। २ ।।

अरज मंजूर इतनी सी, तेरे इस दास की कर ले,
जुबां से "हर्ष" की कान्हा, तुम्हारा नाम ही निकले,
तेरे बिन दाग किस्मत का, हमारा ना धुला होता ।। ३ ।।

(तर्ज : पणिहारी)

मेलो भर्‌यो है थारो जोर को जी, "आया भगत अपार"-२
फागण आग्यो जी ओ बाबा श्याम जी ।। टेर ।।

उत्सव मण्डया है चारूँ मेर जी, "थारी होवे जै जै कार"-२,
फागण आग्यो जी ओ बाबा श्याम जी ।। १ ।।

ध्वजा उड़े है असमान जी "थारा लहरावे निशान"-२,
फागण आग्यो जी ओ बाबा श्याम जी ।। २ ।।

रंग बसन्ती छा गयो जी "खेला रंग गुलाल"-२,
फागण आग्यो जी ओ बाबा श्याम जी ।। ३ ।।

"हर्ष" खड़्योहैझोलीमाण्डकेजी,"बाबाराखोमेरीलाज"-२,
फागण आग्यो जी ओ बाबा श्याम जी ।। ४ ।।

(तर्ज : रूठे रूठे पिया...)

मैया बैरी घणो कन्हैयो तेरो-२,
फोड़ के मटकी माखन खा गयो मैया यो मेरो,
पकडुं तो माँ हाथ न आवे यो जुल्मी छोरो ।। टेर ।।

यो लागे भोलो ढ़ालो, माँ छोरो नन्द को लालो,
मेरे लारे लारे आवे, मेरी मटकी तोड़ गिरावे,
ई जुल्मी सै, कइयाँ छूटे-२, मेरो माँ लेरो ।। १ ।।

यो छोरां सागे आवे, मेरा कपड़ा श्याम चुरावे,
मैं लाज सूं मर मर जाऊँ, पण कीने जाय बताऊँ,
बान्ध दे ईका, हाथ माँ दोन्यू-२, पड़ जासी बेरो ।। २ ।।

यो रस्ते माही घेरे, मन्ने देख एकली छेड़े,
नैणा सूं नैण लड़ावे, और सुध मेरी बिसरावे,
"हर्ष" कहवे माँ, घणो सतावे-२, छोटो सो छोरो ।। ३ ।।

(तर्ज : धमाल)

म्हारा पण्डित जी म्हारो हाथ देखकर आज बताद्यो जी
कइयाँ होसी श्याम से मिलणो, जुगत भिड़ाद्यो जी ।। टेर ।।

श्याम धणी रे दरसण ताई, मनड़ो म्हारो तरसे जी,
जतन करो थे म्हारी भी या आस पुराद्यो जी ।। १ ।।

कद आवेली शुभ री घड़ियाँ, कद म्हाने श्याम बुलासी जी,
पूजा पाठ करो पण म्हारो काम पटाद्यो जी ।। २ ।।

जोग देखल्यो लिख्यो के कोन्या, श्याम को दरसण म्हाने जी,
पत्री म्हारी बाँच के म्हाने आज सुणाद्यो जी ।। ३ ।।

आडी टेडी हाथ मे म्हारे, जाणे कितणी रेखा जी,
मन्तर मारके "हर्ष" श्याम सै आज मिलाद्यो जी ।। ४ ।।

(तर्ज : यो थारो परिवार है हरदम...)

म्हे थारी संतान हाँ बाबा साथ निभावन आ जइयो,
टाबरियाँ के सिरपे थारो, हाथ फिरावण आ जइयो ।। टेर ।।

हर ग्यारस ने थारे नाम की, घर में ज्योत जगावाँ हाँ,
बणा चूरमो बारस के दिन, चरणां धोक लगावाँ हाँ,
भगतां के घर सेठ साँवरा, भोग लगावण आ जइयो ।। १ ।।

निज भगतां की संकट माही, थेही करो सहाई जी,
घर-घर डंको बाजे थारो, भोत घणी सकलाई जी,
टाबरियाँ पर भीड़ पड़े तो, पीड़ मिटावण आ जइयो ।। २ ।।

टाबरियाँ सूं भूल चूक तो, हर दम ही होती आई,
श्याम धणी थे मायत बणके, म्हारी भूलां बिसराई,
"हर्ष" कह्वे बेटा ना थारे, गले लगावन आ जइयो ।। ३ ।।

(तर्ज : पंख होते तो उड़...)

मोर छड़ी लहराई रे ऽऽऽ, रसिया ओ साँवरा,
तेरी बहुत बड़ी सकलाई रे, ओऽऽऽ ।। टेर ।।

मोर छड़ी का जादू निराला, इसको थामे है खाटू वाला,
लीले चढ़के दौड़ा ये आयेऽऽऽ-२, सारे संकट पल में मिटाये,
रसिया ओ साँवरा, तेरी बहुत बड़ी... ।। १ ।।

श्याम बहादुर दर्शन को आये, ताले मंदिर के बन्द पाये,
मोरछड़ीसेतालोंकोखोलाऽऽऽ-२,शीशझुकाकरबाबासेबोला,
रसिया ओ साँवरा, तेरी बहुत बड़ी... ।। २ ।।

मोरछड़ी की महिमा है भारी, श्याम धणी को लागे ये प्यारी,
"हर्ष" कहे रोतों को हँसायेऽऽऽ-२, हाथों में जब तेरे लहराये,
रसिया ओ साँवरा, तेरी बहुत बड़ी... ।। ३ ।।

(तर्ज : तेरी राहो में खड़े है...)

मोहे राहों में सताये काहे साँवरे,
तेरी राधा दिवानी पड़े पाँव रे
ऐसे छुओ ना पिया, मेरा काँपे रे जिया,
मोहे आये रे हया, कान्हा कर तू दया ।। टेर ।।

निकलूं घर से डर सा लागे-२,
निकलूं घर से, डर सा लागे, जियरा धड़के, क्या हो आगे,
श्याम नजर के तीर तू दागे ।। १।।

देख तुम्हारी, भोली सूरत-२,
देख तुम्हारी, भोली सूरत, दिल में जागे, ऐसी चाहत,
पत्थर की बन जाऊँ मूरत ।। २ ।।

"हर्ष" ये तेरा, मुरली बजाना-२,
"हर्ष" ये तेरा, मुरली बजाना, चोरी-चोरी जियरा चुराना,
गूजरियों के मन बस जाना ।। ३ ।।

(तर्ज : ये दोस्ती हम नहीं छोड़ेगें...)

ये आस्था, अब नहीं टूटेगी,
टूटेगा, दम मगर, तेरी आस ना छूटेगी ।। टेर ।।

मेरे श्याम तेरा नाम, आठो याम सुबह-शाम, लेता तेरा दास,
रूठे ये सारा जग, थामे तू मुझे अब, रखना तेरे पास,
द्वार तेरा छूटे ना, प्रेमियों से रूठे ना, अब तो साँवरे ।। १ ।।

फेरूं मैं मुँह जिधर, आता है तू नजर, दूजा ना कोई,
धरूं मैं तेरा ध्यान, ना सिवा तेरे श्याम, पूजा है कोई,
गुण तेरा गाऊँगा, तुझको ही ध्याऊँगा, अब तो साँवरे ।। २ ।।

झूठी ये काया है, झूठी ये माया है, झूठा जग का प्यार,
सच्चा नाम तेरा है, साथी तू मेरा है, सच्चा तेरा द्वार,
"हर्ष" तेरा हो गया, तुझमे ही खो गया, अब तो साँवरे ।। ३ ।।

(तर्ज : मैया का चोला लाल...)

रंग बिरंगे प्यारे प्यारे, भाँत भाँत के न्यारे न्यारे,
फूलों की होगी कान्हा होली, खेलन को तैयार हो जरा ।।

आज की होली हर होली से होगी सबसे न्यारी,
रंगों के बदले फूलों से खेलो श्याम बिहारी,
बागो से चुन चुन, कलियाँ लाये, हाथो से बुनबुन, हार बनाये,
आई है भगतों की टोली, खेलन को तैयार...।। १ ।।

चम्पा-जुही और चमेली लाल गुलाब मंगाया,
गेन्दा-रजनी और मोगरा भर-भर थाल सजाया,
बचके रहना, कृष्ण मुरारी, फूलों की बरखा, होगी भारी,
छेड़ेगें तेरे हम-जोली, खेलन को तैयार हो जरा... ।। २ ।।

बड़ा ही नाजुक है तू कान्हा जोखिम हम ना लेगें,
गाल तुम्हारे छिल जायेगें रंग नहीं खेलेगें,
इसीलिये, ये फूल मंगाये, कोमल कलियाँ, तुझपे लुटायें,
"हर्ष" करेगें हम ठिठोली, खेलन को तैयार हो जरा... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(राग रचयिता : दामोदर शर्मा, भागलपुर)

राजस्थान की पावन भूमि-२, खाटू नगरी धाम,
जहाँ पर रहते बाबा श्याम ।। टेर ।।

द्वापर युग का बर्बरीक ही, "कलयुग में श्री श्याम बना"-२,
हारे के साथी का भगतो, "खाटू पावन धाम बना"-२,
माँ आज्ञा को मान के जिसने-२, दिया शीश का दान ।। १ ।।

श्याम कुण्ड की निर्मल धारा, "सबके पाप मिटाती है"-२,
श्याम बगीची के दर्शन से, "काया कँचन होती है"-२,
आलुसिंह की फुलवारी के-२, दर्शन से आराम ।। २ ।।

मकराने का भवन निराला, "शोभा जिसकी भारी है"-२,
बाँये गोपीनाथ विराजे, "सन्मुख श्याम बिहारी है"-२,
ड्योढ़ी पर पहरा देते है-२, राम भक्त हनुमान ।। ३ ।।

फागुन के महिने में लगता,"मेला बड़ा निराला है"-२,
खोल खजाना माल लुटाता, "बाबा खाटू वाला है"-२,
"हर्ष" कहे रे आसमान में-२, लहराते है निशान ।। ४ ।।

(तर्ज : ओ मेरे दिल के चैन...)

रो रहे, कबसे नैन, कौन आये सिवा तेरे, भला थामने ।।

तू ही तो मेरा मालिक है, तेरे सिवा कोई और नहीं,
तुझपे ही चलता जोर मेरा, और किसी पे कोई जोर नहीं,
आँहें मैं भरूँ, विनति मैं करूँऽऽऽ,
हाय तुझको पुकारूँ मेरे साँवरे ।। १ ।।

तेरी मोहब्बत में मोहन, तेरा दिवाना हार गया,
तेरी जुदाई का खंजर, मेरे जिगर के पार गया,
तड़पे है जिया, घायल सा हुआऽऽऽ,
हाय तुझको पुकारूं मेरे साँवरे ।। २ ।।

अपना समझ के श्याम मेरा, साथ निभाने आजा तू,
"हर्ष" सिसकते बेटे को, धीर बंधाने आजा तू,
प्रेमी हूँ तेरा, साथी तू मेराऽऽऽ,
हाय तुझको पुकारूं मेरे साँवरे ।। ३ ।।

(राग रचयिता : प्रवीन बेदी)९८३०४३२६६९

रोती आँखे रोने दे, श्याम चरण को धोने दे,
गम आसूँ में ढ़ल जाये, शायद श्याम पिघल जाये ।। टेर ।।

ये मायत हम बच्चे हैं, दुःख सहने में कच्चे हैं,
समझे जो मन की बातें, रोना बस उसके आगे,
पत्थर दिल भी हिल जाये, शायद श्याम...।। १ ।।

गम जो हद से बढ़ जाये, आँसू बन कर बह जाये,
जब कोई प्रेमी रोता है, दर्द श्याम को होता है,
पता श्याम को चल जाये, शायद श्याम... ।। २ ।।

श्याम के सन्मुख रोयेगा, पाप तेरे ये धोयेगा,
रो रो जब थक जायेगा, पल में काम बन जायेगा,
संकट सारे टल जाये, शायद श्याम... ।। ३ ।।

दौलत से ना रीझेगा, आँसू से ही पसीजेगा,
"हर्ष" तू दरपे शीश झुका, आँसु की सौगात चढ़ा,
भगती तेरी फल जाये, शायद श्याम... ।। ४ ।।

(तर्ज : किस्मत वालो को मिलता है ...)

लिखने वाले तू लिख दे किस्मत मे तेरा प्यार,
मुझको मिल जाये कान्हा तेरा दीदार ।। टेर ।।

मै तो मेरे साँवरे की, भोली सुरतिया,
दिल में बसाके चला आया हूँ,
ठुकरा दी आज कान्हा, मैने ये दुनिया,
तेरी शरण लेने आया हूँ,
मुझको है मेरे दाता, तेरी दरकार ।। १ ।।

भगतों से भगवन का, मेरे कन्हैया,
रिश्ता है बड़ा ही करीब का,
मिल जाये प्यार तेरा, जिसको भी प्यारे,
बड़ा वो अमीर है नसीब का,
मैने भी तुझसे दिल के, जोड़े है तार ।। २ ।।

लिख दे तू आज ऐसी, मेरी भी किस्मत,
तेरी चरण धूली पाऊँ मैं,
सीढ़ियों पे बैठ कर, मंदिर की तेरी,
तेरे भजन यूँही गाऊँ मैं,
करूणा की "हर्ष" पे कब, बरसेगी धार ।। ३ ।।

(तर्ज : स्वरचित)

लीला घोड़ा छम छम नाचे बाबा तेरे द्वारे पे,
तूफानों के होश उड़ाये चाले जब रफ्तार से ।। टेर ।।

ये तेरा हमराज है, इसपे तुझको नाज है,
लीले के असवार का, सारे जग में राज है,
हरदम हरपल साथ रहे ये मेरे लखदातार के ।। १ ।।

भगतों पे जो संकट आये, पल मे दौड़ा आता है,
बिठा पीठ पर श्याम धणी को, पवन वेग से लाता है,
सच्चा सेवक इसको माना कलयुग के अवतार ने ।। २ ।।

श्याम से नाता गहरा है, दरपे इसका पहरा है,
भगतों दर्शन पालो तुम, मौका बड़ा सुनहरा है,
इसके जैसा दूजा ना है इस सारे संसार में ।। ३ ।।

उछल उछल के नाच रहा है, कैसी मस्ती छाई है,
देव देवता सोच रहे क्या, इसके मन मे आई है,
"हर्ष" खुशी से लोट रहा है चरणों में सरकार के ।। ४ ।।

(तर्ज : तेरे जैसा यार कहां...)

साथी मेरा कौन यहाँ, तेरे सिवा ओ कान्हा,
तू ही बस मेरा है, सारा जग बेगाना ।। टेर ।।

तेरी बंदगी करूं मैं, तुझको सदा ही ध्याऊँ,
संकट में साथ मेरे, तुझको सदा ही पाऊँ,
तेरे सिवा कोन सुने, बाबा मेरा अफसाना ।। १ ।।

तुम साथ हो जो मेरे, मुझको फिकर नहीं है,
अपने परायों की भी, मुझको खबर नही है,
सिरपे तेरा हाथ रहे, बोले तेरा दिवाना ।। २ ।।

मेरी जिन्दगी में आये, अहसान है तुम्हारा,
तेरे "हर्ष" को कन्हैया, हरदम मिले सहारा,
जीवन में ना भूलूगां, बाबा तेरा नजराना ।। ३ ।।

(तर्ज : सिलसिले मुलाकातों के ...)

साँवरे मेरे हाथों को "ना छोड़ियेगा"-२,
दिल का खिलौना बाबा "ना तोड़ियेगा"-२, ।। टेर ।।

तेरे सिवा मेरा कोई नही है,
तुझमे ही अंखिया ये खोई हुई है,
शीशे का दिल ये मेरा, "ना तोड़ियेगा"-२ ।। १ ।।

बाबा सदा मेरा साथ निभाना,
गिरने लगुं तो तू आकर उठाना,
बंधन हमारा प्यारा, "ना तोड़ियेगा"-२ ।। २ ।।

"हर्ष" भरोसा है केवल तुम्हारा,
मुश्किल समय मे तू देना सहारा,
अपने भगत से मुखड़ा "ना मोड़ियेगा"-२ ।। ३।।

(तर्ज : काँटों से खींचके ये आँचल...)

सिर से सरक गया आँचल,पैरों में छम छम बाजी पायल-२,
ओऽऽऽकोईसुनाकेमुरलीकीतानको,वशमेंकिया,आऽऽऽ,
आज जिया पे बन आई है, श्याम ने बंशी जो बजाई है ।। टेर ।।

तूने जो बंशी बजाई, राधा दिवानी दौड़ी आई-२,
ओऽऽऽ जाने क्या जादू किया बांसुरी ने, ओ रे पिया, आऽऽऽ,
आज जिया पे बन आई... ।। १ ।।

वश में किया रे तूने कान्हा, छेड़ा है ऐसा क्यूं तराना-२,
ओऽऽऽ बंशी में राधा तेरी खो गई है, तड़पे जिया, आऽऽऽ,
आज जिया पे बन आई...।। २ ।।

छोड़ो यूं मुरली बजाना, अपनों को "हर्ष" यूं सताना-२,
ओऽऽऽ डर है दिवानी कहीं हो न जाये, घायल पिया, आऽऽऽ,
आज जिया पे बन आई... ।। ३ ।।

(तर्ज : ऐ मेरी जोहरा जबी...)

सुनो वृषभान लली, मेरी कोमल सी कली,
मानो मिसरी की डली, ऊँची तेरी शान,
तुझपे कुर्बान तेरा श्याम तेरा श्याम ।। टेर ।।

तू प्यार का संगीत है, तो गीत हूँ, मैं तेरा,
तू बाँसुरी की मीत है, तो मीत हूँ, मै तेरा,
तू मेरी-२, साँसो में बस गई ओ सखी ।। १ ।।

युँ बिजलियाँ गिराओगी, कँही का ना, रहूँगा मैं,
युँ ख्वाब में जो आओगी, कभी ना सो, सकूगां मैं,
युँ मेरी-२, नीन्दे उड़ाई तूने ओ सखी ।। २ ।।

ये बाँसुरी की तान पे, मचल गया, तेरा जिया,
ये पायलों की थिरकने, सुना रही, है दास्तां,
ये तूने-२, "हर्ष" कैसा जादू किया ओ सखी ।। ३ ।।

(राग रचयिता : प्रवीण बेदी)९८३०४३२६६९

सेवा करेगी तेरी दिन और रात,
शादी करादे मेरी राधा के साथ,
विनति करूं माँ तेरे जोडुं मैं हाथ-२,
शादी करादे मेरी राधा के साथ ।।

खटने की तेरी अब ना उमरिया, घर को सम्भालेगी अब वो गुजरिया,
गऊऐं सम्भालेगी, माखन निकालेगी-२,
घर में बंटायेगी तेरा माँ हाथ ।। १ ।।

बाबा का हुक्का भरेगी वो आके, जल्दी से मैया तू नेग भिजा दे,
जंगल न जाऊँगा, माखन न खाऊगाँ-२,
लल्ला को दे दे माँ प्यारी सौगात ।। २ ।।

छोटे कन्हैया की सुनकर के बातें, खुशियों से छलकी रे मैया की आँखे,
बोली माँ लाला, वो गोरी तू काला-२,
आगे क्या उसके है तेरी बिसात,
कैसे जमेगी जोड़ी राधा के साथ ।। ३ ।।

माना मैं मैया हूँ थोड़ा सा काला, मेरा बिरज में है रूतबा निराला,
"हर्ष" वो दिवानी है, प्रीत माँ पुरानी है-२,
मेरा और राधा का जनमों का साथ ।। ४ ।।

(तर्ज : परदेशी आऽऽऽ...)

सुन सावँरा-२, मुझे इतना पता,
तेरे होते ओ बाबा, डरना कैसा भला ।। टेर ।।

लोगों से कहता हूँ, चरणों में रहता हूँ,
चिन्ता फिकर क्या कुछ भी न जानूँ ऽऽऽ,
तेरी ही माया है, तूने निभाया है,
तेरी दया से मस्ती छानू ऽऽऽ,
तू जो मिला-२, मेरा चितवन खिला,
इस बेटे को तूने, जीना सिखला दिया ।। १ ।।

खाटू की गलियों में, फूलों में कलियों में,
हारे के साथी की खुशबू बसी है ऽऽऽ,
मेरी इन आँखो में, मेरी ही साँसो में,
मेरे दयालू तेरी छवि हैऽऽऽ,
तेरा हुआ-२, मै तो तेरा हुआ,
तेरी चौखट पे बाबा, मेरा दिल खो गया ।। २ ।।

अश्कों को बहने दो, बह बह के कहने दो,
"हर्ष" मिले युँही तेरा सहारा ऽऽऽ,
दुनिया ये छूटे तो, अपने जो रूठे तो,
छूटे ना बाबा ये दामन तेरा ऽऽऽ,
तेरी दया-२, ये है तेरी दया,
इक भटके को तूने, रस्ता दिखला दिया ।। ३ ।।

(तर्ज : स्वर्ग से सुन्दर सपनों से...)

श्याम सलोने हम भक्तों से करते कितना प्यार,
हमे इक बार-बतादे, मेरे सरकार बतादे ।। टेर ।।

हमने तो सब कुछ, अर्पण किया है,
चौखट पे तेरी बाबा, समर्पण किया है,
श्याम तुम्हे भी हम दीनो की कितनी है दरकार ।। १ ।।

आँखे हमारी बाबा, दर्शन को तरसे,
तेरी जुदाई में ये, रह रह के बरसे,
श्याम तुम्हे भी रहता होगा भक्तों का इंतजार ।। २ ।।

"हर्ष" बना है बाबा, तेरा दिवाना,
क्या तू भी चाहे कहदे, कैसा छिपाना,
श्याम कहीं ये नहीं हमारा इक तरफा ही प्यार ।। ३ ।।

(तर्ज : आज मैया का जगराता...)

श्याम प्रभु जी घर आये कि खुशियाँ मनायेगें,
चरणों में शीश झुकायें कि महिमा गायेगें,
झूमेगें हम नाचेगें-२, और मीठे भजन सुनायेगें ।। टेर ।।

हारे के साथी की भगतों, "महिमा वरणी न जायें-२,
मुखड़े पर है तेज निराला, "नजरे ठहर न पाये"-२,
मान बढ़ाने आये है-२, और खुशियाँ देकर जायेगें ।। १ ।।

सारे भगतों ने मिल करके, "पावन ज्योत जगाई"-२,
दुनिया ने इस ज्योत की देखी, "बहुत बड़ी सकलाई"-२,
लाज बचाने आये हैं-२, और अपना हमें बनायेगें ।। २ ।।

मुद्दत से श्री श्याम पधारे, "आज न जाने देना"-२,
"हर्ष" कहे नैनों में अपने, "बंद इन्हे कर लेना"-२,
प्रीत निभाने आये हैं-२, और आशिष देकर जायेगें ।। ३ ।।

(तर्जः ठण्डे ठण्डे पानी में नहाना चाहिए...)

हमको खाटू जाने का बहाना चाहिये,
बुलावा जैसे चाहे आये, आना चाहिये ।। टेर ।।

हो जात या जडूला, फागुन का होवे मेला,
चाहे श्याम की हो ग्यारस, या चान्दनी हो बारस,
कोई माने या न माने, हम श्याम के दिवाने,
हर पल यही मनायें, जल्दी बुलावा आये,
श्याम जी के चरणों में ठिकाना चाहिये ।। १ ।।

टोले बनाके सारे, ये श्याम के दुलारे,
बाबा के धाम जाते, बाबा को जा रिझाते,
सेवा करे सभी की, बाबा के पायकों की,
बूढ़े या बच्चे नारी, देखा जुनुन भारी,
सेवकों को सेवा का बहाना चाहिये ।। २ ।।

जो जा सका न कोई, आँखे उसी की रोई,
बोला ऐ खाटू वाले, मुझको भी तू बुलाले,
ना देर तू लगाना, जल्दी हुक्म सुनाना,
तेरा "हर्ष" ये मनाता, चरणों में सिर झुकाता,
श्रद्धा से श्री श्याम को मनाना चाहिये ।। ३ ।।

(तर्ज : मुझे प्यार की जिन्दगी...)

शरण में तुम्हारी, मुझे दो ठिकाना,
जरा हाथ मेरे, सर पे फिराना ।। टेर ।।

सुना श्याम तेरा, नियम है निराला,
शरण जो भी आया, बना रखवाला,
चौखट पे तेरी खड़ा है दिवाना ।। १।।

तुझको भुलाकर, मंजिल से भटका,
माया के जालिम, झमेलों में अटका,
तेरा काम भूले को रस्ता दिखाना ।। २ ।।

बुरे से बुरे को, तुमने है तारा,
तेरा "हर्ष" पूछे, मुझे क्यूँ बिसारा,
बुराई से हमको सदा तू बचाना ।। ३ ।।

(तर्ज : श्याम देने वाले है...)

श्याम घर आये है, राधे जी को लाये हैं,
इनको सावन के झूले झुलाना,
जरा धीरे से डोर हिलाना ।। टेर ।।

घर में पधारी है जोड़ी ये प्यारी,
होले से मुस्काये सांवरा बिहारी,
राधे रानी भोली है, श्याम हमजोली है,
प्यारी राधा का कन्हा दिवाना, जरा धीरे से डोर... ।। १ ।।

दुनिया की डोरी है हाथों मे जिनके,
बैठे वो झूले के आसन पे डटके,
राधा ने बुलाया है श्याम दौड़ा आया है,
सच्चे हृदय से इनको रिझाना, जरा धीरे से डोर... ।। २ ।।

ठाकुर पधारे हैं घर में तुम्हारे,
"हर्ष" तुम्हारे हुए वारे न्यारे,
राधे जी की लीला है, श्याम तो रंगीला है,
इनके चरणों में सिर को झुकाना, जरा धीरे से डोर... ।। ३ ।।

(तर्ज : गोरी है कलइयाँ...)

श्याम सलूणा, करे क्यूं जादू टूणा,
मतना जलावे म्हारो जीव रे ।। टेर ।।

होंठ गुलाबी तेरा, नैण है कटीला,
हाथां में मुरली सोवे, छलिया रंगीला,
मुरली बजावे, साँवरा मस्त बणावे,
निजरां को फेँक्यो म्हापे दाव रे ।। १ ।।

बाँकी लटक तेरी, धेनु चरैया,
हिवड़ो चुरायो म्हारो, माखन चुरैया,
खेंच के मारी, साँवरा नैण कटारी,
कालजे में लाग्यो म्हारे घाव रे ।। २ ।।

महँगी पड़ी है थाँसू, यारी कन्हाई,
"हर्ष" भगत थारा, नीन्द गंवाई,
नैण मिलावुं, साँवरा सुध बिसराऊँ,
दर्शन को लाग्यो म्हाने चाव रे ।। ३ ।।

(तर्ज : यार चाहिये कि तुझे प्यार चाहिये...)

श्याम चाहिये कि तुझे नाम चाहिये-२,
गुणगान कर रहे हो-२, क्या इनाम चाहिये ? ।।

भावना - भक्ति - इबादत और सेवा है कहाँ,
हो खुले मन से समर्पण, "ऐसा अर्पण है कहाँ"-३,
एक मण्डल खोल ले फिर श्याम तेरा हो गया,
आपसी झगड़े में मेरा,"श्याम ही गुम हो गया"-३,
श्याम की तस्वीर मिलती हर किसी की जेब में,
अब सिसकता साँवरा "ऐसे भगत की कैद में"-३,
आज कितनों ने शराफत कोड़ी बदले तौल दी,
श्याम जी के नाम पर "अपनी दुकानें खोल दी"-३,
साँवरे का ऽऽऽ-२, हो न हो पर नाम खुद का चाहिये,
फिर सुबह अखबार में "फोटो भी छपना चाहिये"-३,
गर नाम ना मिले तो-२, फिर दाम चाहिये,
श्याम चाहिये कि तुझे नाम चाहिये... ।।१।।

चन्द ऐसी भी है जो श्रद्धा से सबकी खेलते,
श्याम जी के नाम पे, "सब ढोंग उनका झेलते"-३,
लेखकों की क्या कहुँ ईमान ही बिकता यहाँ,
गैर की रचना पे अपना "नाम वो लिखता यहाँ"-३,
थोक में गायक यहाँ पर पाओगे बाजार में,
पर मिलेगा श्याम सेवक "सैकड़ों हजार में"-३,
नौकरी ना मिल सके जिसको तो दो हजार की,
आज पीकर गा रहा "महिमा मेरे सरकार की"-३,
श्याम जी SSS-२, के नाम पर करता गुजारा जो यहाँ,
कर रहा भद्दे इशारे किर्तनों में वो यहाँ-३,
जो करना है ईशारा-२, खुले आम चाहिये,
श्याम चाहिये कि तुझे नाम चाहिए... ।।२।।

लोग चाहे कुछ कहे इससे गरज क्या आपको,
बह रही गंगा है इसमें "चाहे जितना छाप लो"-३,
आपके विश्वास को वो कैश कर लेगें यहाँ,
साँवरे के नाम पर वो "ऐश कर लेगें यहाँ,-३,
धर्म रथ पर बैठ कर लेकर सहारा नाम का,
चल पड़ेगा संत बनके "कोई पायक श्याम का"-३,

श्याम जी के ऐ दिवानों ऐसा तुम कुछ ना करो,
देखता वो हर करम को "श्याम से कुछ तो डरो"
छोड़ कर ऽऽऽ-२, अब तू बुराई श्याम का गुणगान कर,
पीछे की सारी भुलादे आगे का सामान कर,
जो मेट दे बदि को-२, वो सामान चाहिये,
श्याम चाहिये कि तुझे नाम चाहिये... ।।३ ।।

इक सिपाही साँवरे का श्याम बहादुर जी बने,
श्याम बहादुर की डगर को "आलू सिंह जी भी चुने"-३,
भक्त के विश्वास को मेरे श्याम ने रख्खा सदा,
इस लिए तो खुल गये "ताले छड़ी से झट वहाँ"-३,
बाई कमला-शान्ति-सावित्री बन कोई देख ले,
श्याम की दिवानगी में "कर समर्पण देख ले"-३,
छोड़ कर झूठी नवाबी श्याम का जो हो गया,
श्याम की किरपा से उसका "नाम जग में हो गया"-३,
"हर्ष" कहताऽऽऽ-२, दिल लगाकर श्याम को तू ध्यायेगा,
एक दिन डयोढ़ी पे तेरी "श्याम चलकर आयेगा"-३,
तुझे श्याम का सहारा-२, आठो याम चाहिये,
श्याम चाहिये कि तुझे नाम चाहिये... ।।४ ।।

(तर्ज : अल्लाह ये अदा..)

श्री श्याम साँवरा, भूखा है तेरे भावों का,
रंग इसपे चढ़ेगा दुआओं का-२ ।। टेर ।।

श्रद्धा-भक्ति का अर्पण इसे चाहिए,
सच्चे मनसे समर्पण इसे चाहिए,
फिर ये साथी बनेगा तेरी राहों का-२,
श्री श्याम... ।। १ ।।

तेरी आँखो के भावों को पढ़ लेगा ये,
अपनी भक्ति में तुझको जकड़ लेगा ये,
देगा तुझको सहारा अपनी बाँहो का-२,
श्री श्याम... ।। २ ।।

इसको पाना जो चाहो तो ऐसा करो,
किसी हारे का तुम भी सहारा बनो,
"हर्ष" होगा असर तेरी आहों का-२,
श्री श्याम... ।। ३ ।।